अपठित बोध

अपठित गद्यांश व काव्यांश पर चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न

अपठित गद्यांश

निर्देश–निम्नलिखित गद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर उन पर दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) स्वस्थ, सुखी और संतुलित जीवन का मार्ग है–संयम। संस्कारों को परिमार्जित करने का नाम भी संयम है। यदि हमारे जीवन में स्वास्थ्य व संतुलन न हो तो जीवन सुचारु रूप से नहीं चल पाएगा और कोई भी मानव असंतुलित एवं अस्वस्थ जीवन भी नहीं चाहेगा। जो हमारे मन और इंद्रियों को मलिन करे, ऐसा कार्य नहीं करना चाहिए। शरीर के अस्वस्थ होने पर हम विचार करते हैं कि गलत खाने से तबीयत बिगड़ जाएगी; इसलिए अपाच्य भोजन मत ग्रहण करो; पर यहाँ हमारी चेतना और आत्मा की तबीयत रोज़ बिगड़ रही है, तब कोई चिंता नहीं। हमारे भीतर से ही यह विचार आना चाहिए कि जैसे शरीर की फ़िक्र है, वैसे ही चेतना के उत्थान और पतन के लिए मुझे ही सोचना है। इंद्रियाँ घोड़े के समान हैं। घोड़े पर यात्रा करने के लिए उसकी लगाम हम हाथ में रखते हैं। इसी तरह जब हम इंद्रिय-घोड़े पर सवार होते हैं, तब हमारे मन की लगाम हाथ में रहे तो सारा काम आसानी से हो सकता है। आवश्यकता है, संस्कारों के परिष्कार की। यदि आप अपने स्वस्थ-चरित्र और आदर्शों के बल पर जीवन के लक्ष्य को प्राप्त करेंगे तो यह संसार स्वयं ही आपकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त करेगा।

1. लेखक के अनुसार संयम है–

(क) संतुलित आहार

(ख) स्वस्थ व संतुलित शरीर

(ग) स्वस्थ व संतुलित जीवन

(घ) अस्वस्थ व असंतुलित जीवन।

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)–स्वास्थ्य एवं संतुलन के अभाव में जीवन सुचारुरूप से नहीं चल सकता।

कारण (R)–कोई भी मनुष्य अस्वस्थ एवं असंतुलित जीवन नहीं चाहता।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. 'इंद्रियाँ घोड़े के समान हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–

1. मन की लगाम हाथ में रहनी चाहिए।

2. इंद्रियों को खूब दौड़ाना चाहिए।

3. लगाम ढीली रहनी चाहिए।

(क) 1 सही है

(ख) 2 सही है

(ग) 3 सही है

(घ) 2 और 3 सही हैं।

4. संस्कारों को परिमार्जित करना क्या है–

(क) नियम (ख) संयम

(ग) स्वच्छता (घ) पवित्रता।

5. 'लगाम हाथ में रहना' का अर्थ है–

(क) बाँध लेना (ख) खूब दौड़ाना

(ग) नियंत्रण में रहना (घ) खुली छूट देना।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(2) किसी भी देश के युवा-वर्ग को उसकी प्रगति का आधार माना जाता है। युवा-वर्ग कुछ नया करने की जिज्ञासा के साथ आगे बढ़ता है, नई चीज़ों को जानने, परखने, खोज करने की ओर अग्रसर रहता है। युवा-वर्ग साहस व शक्ति से परिपूर्ण होता है। किसी भी कार्य को चुनौती के रूप में स्वीकार करना उसकी आदत व स्वभाव होता है, परंतु आज कई कारणों से युवा-वर्ग दिशाहीन होता जा रहा है। यद्यपि उसे पढ़ने-लिखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध हैं, पर इसके बावजूद वह नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करने लगा है। इसका कारण है, उसकी बेरोज़गारी। इस बेरोज़गारी ने उसे कुंठाग्रस्त बना दिया है। युवा-वर्ग अपराधों की ओर उन्मुख होने लगा है। वह किसी-न-किसी तरह अधिक-से-अधिक धन पा लेना चाहता है; अतः साधनों की परवाह नहीं करता। यह स्थिति भयावह है। युवा-पीढ़ी को सही मार्गदर्शन की आवश्यकता है। इस स्थिति से बचने के लिए शिक्षा को रोज़गारपरक बनाना होगा। उनकी सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना होगा तथा उनमें नैतिक मूल्य संस्कारित करने होंगे।

1. कौन-सी विशेषता युवा-वर्ग की नहीं है–

(क) किसी कार्य को चुनौती के रूप में लेना

(ख) कुछ नया करने की जिज्ञासा होना

(ग) परंपरा व रूढ़ियों का पालन करना

(घ) साहस व शक्ति से परिपूर्ण होना।

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)–युवा-वर्ग किसी देश की प्रगति का आधार होता है।

कारण (R)–वह कुछ नया करने की जिज्ञासा के साथ आगे बढ़ता है।

(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. 'आज युवा-वर्ग दिशाहीन होता जा रहा है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–

1. वह नैतिक मूल्यों की उपेक्षा करने लगा है।

2. बेरोजगारी ने उसे कुंठाग्रस्त बना दिया है।

3. वह मन लगाकर पढ़ता है।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है

(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

4. 'कुंठाग्रस्त' में कौन-सा समास है–

(क) अव्ययीभाव (ख) तत्पुरुष

(ग) कर्मधारय (घ) बहुव्रीहि।

5. किसी देश की प्रगति का आधार किसे माना जाता है–

(क) किसान को (ख) वृद्धों को

(ग) बच्चों को (घ) युवा-वर्ग को।

उत्तर— 1. (ग) 2. (घ) 3. (घ) 4. (ख) 5. (घ)।

(3) एक दिन गुरु नानक यात्रा करते-करते भाई लालो नाम के एक बढ़ई के घर ठहरे। उस गाँव का भागो नामक रईस बड़ा मालदार था। उस दिन भागो के घर ब्रह्मभोज था। दूर-दूर से साधु आए हुए थे। गुरु नानक का आगमन सुनकर भागो ने उन्हें भी निमंत्रण भेजा। गुरु ने भागो का अन्न खाने से इनकार कर दिया। इस बात पर भागो को बड़ा क्रोध आया। उसने गुरु नानक को बुलवाया और उनसे पूछा–आप मेरे यहाँ का अन्न ग्रहण क्यों नहीं करते। गुरुदेव ने उत्तर दिया–भागो, अपने घर का हलवा-पूरी ले आओ, तो हम इसका कारण बतला दें। वह हलवा-पूरी लाया तो गुरु नानक ने लालो के घर से भी उसके मोटे अन्न की रोटी मँगवाई। भागो की हलवा-पूरी उन्होंने एक हाथ में और भाई लालो की मोटी रोटी दूसरे हाथ में लेकर दोनों को जो दबाया, तो एक से लहू टपका और दूसरी से दूध की धारा निकली। बाबा नानक का यही उपदेश हुआ। जो धारा भाई लालो की मोटी रोटी से निकली थी, वही समाज का पालन करने वाली दूध की धारा है, यही धारा शिव जी की जटा से और यही धारा मज़दूरों की उँगलियों से निकलती है।

मज़दूरी करने से हृदय पवित्र होता है; संकल्प दिव्य लोकांतर में विचरते हैं। हाथ की मज़दूरी ही से सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है। जापान में मैंने ऐसी कलावती कन्याओं और स्त्रियों को देखा है कि वे रेशम के छोटे-छोटे टुकड़ों को अपनी दस्तकारी की बदौलत हज़ारों की कीमत का बना देती हैं; नाना प्रकार के प्राकृतिक पदार्थों और दृश्यों को अपनी सुई से कपड़े के ऊपर अंकित कर देती हैं। जापान-निवासी कागज़, लकड़ी और पत्थर की बड़ी अच्छी मूर्तियाँ बनाते हैं। करोड़ों रुपये के हाथ के बने हुए जापानी खिलौने विदेशों में बिकते हैं। हाथ की बनी हुई जापानी चीज़ें मशीन से बनी हुई चीजों को मात देती हैं। संसार के सब बाज़ारों में उनकी बड़ी माँग रहती है। पश्चिमी देशों के लोग हाथ की बनी हुई जापान की अद्भुत वस्तुओं पर जान देते हैं। एक जापानी तत्त्वज्ञानी का कथन है कि हमारी दस करोड़ उँगलियाँ सारे काम करती हैं।

1. **भाई लालो कौन था–**

(क) एक लुहार (ख) एक सुनार

(ग) एक बढ़ई (घ) एक ज़मींदार।

2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–भागो ने गुरु नानक को निमंत्रण भेजा।

कारण (R)–गुरु नानक ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **'लालो की मोटी रोटी से दूध की धारा निकली।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. यही धारा शिव की जटाओं से निकलती है।

2. यही धारा मजदूरों की उँगलियों से निकली है।

3. यही धारा धरती से निकलती है।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है

(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

4. **मज़दूरी से क्या होता है–**

(क) हृदय पवित्र होता है

(ख) संकल्प दिव्य लोकांतर में विचरते हैं

(ग) सच्चे ऐश्वर्य की उन्नति होती है

(घ) उपर्युक्त सभी।

5. **पश्चिमी देशों के लोग किस पर जान देते हैं–**

(क) जानवरों पर

(ख) पक्षियों पर

(ग) जापान की हाथ से बनी चीजों पर

(घ) चीन के खिलौनों पर।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ग) 3. (घ) 4. (घ) 5. (ग)।

(4) जब कोई युवा अपने घर से बाहर निकल कर बाहरी संसार में अपनी स्थिति जमाता है, तब पहली कठिनता उसे मित्र चुनने में पड़ती है। यदि उसकी स्थिति बिलकुल एकांत और निराली नहीं रहती तो उसकी जान-पहचान के लोग धड़ाधड़ बढ़ते जाते हैं, और थोड़े ही दिनों में कुछ लोगों से उसका मेल-जोल हो जाता है। यही हेल-मेल बढ़ते-बढ़ते मित्रता के रूप में परिणत हो जाता है। मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर उसके जीवन की सफलता निर्भर हो जाती है, क्योंकि संगति का बड़ा भारी गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता है। हम लोग ऐसे समय में समाज में प्रवेश करके अपना कार्य आरंभ करते हैं, जबकि हमारा चित्त कोमल और हर तरह का संस्कार ग्रहण करने योग्य रहता है। हमारे भाव अपरिमार्जित और हमारी प्रवृत्ति अपरिपक्व रहती है। हम लोग कच्ची मिट्टी की मूर्ति के समान रहते हैं, जिसे जो जिस रूप में चाहे, उस रूप में ढाले; चाहे राक्षस बनाए, चाहे देवता। ऐसे लोगों का साथ करना हमारे लिए बुरा है, जो हमसे अधिक दृढ़ संकल्प के हैं, क्योंकि हमें उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है। पर ऐसे लोगों का साथ करना और भी बुरा है, जो हमारी ही बात को ऊपर रखते हैं, क्योंकि ऐसी दशा में न तो हमारे ऊपर कोई नियंत्रण रहता है और न हमारे लिए कोई सहारा रहता है। कैसे आश्चर्य की बात है कि लोग एक घोड़ा लेते हैं तो उसके सौ गुण-दोष को परख कर लेते हैं, पर किसी को मित्र बनाने में उसके पूर्व आचरण और स्वभाव आदि का कुछ भी विचार और अनुसंधान नहीं करते। वे उसमें सब बातें अच्छी ही अच्छी मानकर अपना पूरा विश्वास जमा देते हैं।

1. **जब कोई युवा घर से बाहर निकलता है तो उसे किस कठिनाई का सामना करना पड़ता है–**

(क) ठहरने के लिए आवास की

(ख) भोजन की

(ग) मित्र चुनाव की

(घ) यातायात के साधन की।

2. **कैसे लोगों का मेल-जोल शीघ्र बढ़ जाता है–**

(क) जो एकांतप्रिय होते हैं

(ख) जो बहुत कम बोलते हैं

(ग) जो वाक्पटु नहीं होते

(घ) जिनकी स्थिति बिलकुल एकांत और निराली नहीं रहती।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–मित्रों के चुनाव की उपयुक्तता पर जीवन की सफलता निर्भर होती है।

कारण (R)–संगति का बड़ा भारी गुप्त प्रभाव हमारे आचरण पर पड़ता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **'अपने से अधिक दृढ़ संकल्प के लोगों का साथ करना बुरा है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
1. उनकी हर बात बिना विरोध के मान लेनी पड़ती है।
2. हमारा अपने ऊपर कोई नियंत्रण नहीं रहता।
3. उनका अधिक सहारा मिल जाता है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 2 और 3 सही हैं।

5. **लेखक ने घोड़े का उदाहरण किस संदर्भ में दिया है–**
(क) मित्र चुनाव के (ख) यात्रा के
(ग) युद्ध के (घ) व्यापार के।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (क)।

(5) संसार में अमरता ऐसे ही लोगों को मिलती है, जो अपने पीछे कुछ आदर्श छोड़ जाते हैं, जिनका स्थायी मूल्य होता है। बहुधा यही देखा गया है कि ऐसे व्यक्ति संपन्न परिवार में बहुत कम पैदा होते हैं। अधिकांश ऐसे लोगों का जन्म मध्यम वर्ग के घरों में या ग़रीब परिवारों में ही होता है। इस तरह का पालन-पोषण साधारण परिवार में होता है और वे सादा जीवन बिताने के आदि हो जाते हैं।

मनुष्य में विनय, उदारता, कष्ट-सहिष्णुता, साहस आदि चारित्रिक गुणों का विकास अत्यावश्यक है। इन गुणों का प्रभाव उसके जीवन पर पड़ता है। ये गुण व्यक्ति के जीवन को अहंकारहीन या सादा-सरल बनाते हैं। सादा जीवन या सादगी का अर्थ है– रहन-सहन, वेशभूषा और आचार-विचारों का एक निर्दिष्ट स्तर। जीवन में सादगी लाने के लिए दो बातें विशेष रूप से करणीय हैं, प्रथम कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में धैर्य को न छोड़ना, द्वितीय अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम बनाना।

सादगी का विचारों से भी घनिष्ठ संबंध है। सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए और अपने विचारों को उच्च बनाए रखना चाहिए। व्यक्ति की सच्ची पहचान उसके विचारों और करनी से होती है। मनुष्य के विचार उसके आचरण पर प्रभाव डालते हैं और उसके विवेक को जाग्रत रखते हैं। विवेकशील व्यक्ति ही अपनी आवश्यकताओं को सीमित रखता है। उन्हें अपने ऊपर हावी नहीं होने देता। सादा जीवन व्यतीत करने वाले व्यक्ति को कभी हतप्रभ होकर अपने आत्मसम्मान पर आँच नहीं आने देनी चाहिए। सादगी मनुष्य के चरित्र का अंग है, वह बाहरी चीज़ नहीं है। महात्मा गांधी सादा जीवन पसंद करते थे और हाथ के कते और बुने खद्दर के मामूली वस्त्र पहनते थे, किंतु अपने उच्च विचारों के कारण वे संसार में वंदनीय हो गए।

1. **संसार में अमरता कैसे लोगों को मिलती है–**
(क) जो खूब धन कमाते हैं
(ख) जो भजन-कीर्तन करते हैं
(ग) जो अपने पीछे कुछ आदर्श छोड़ जाते हैं
(घ) जो केवल अपने लिए जीते हैं।

2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–महापुरुषों का पालन-पोषण साधारण परिवार में होता है।
कारण (R)–वे सादा जीवन बिताने के आदी हो जाते हैं।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

3. **'सादगी मनुष्य के चरित्र का अंग है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
1. वह बाहरी चीज़ नहीं है।
2. वह एक दिखावा है।
3. उससे विवेक उत्पन्न होता है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 2 और 3 सही हैं।

4. **व्यक्ति की सच्ची पहचान किससे होती है–**
(क) वस्त्रों से (ख) खान-पान से
(ग) रंग-रूप से (घ) विचारों और करनी से।

5. **गांधीजी किस कारण संसार में वंदनीय हुए–**
(क) अपने वस्त्रों के कारण (ख) अपनी शिक्षा के कारण
(ग) अपने उच्च विचारों के कारण (घ) अपनी वीरता के कारण।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(6) परिवार का नियोजन कैसा होगा? इस प्रश्न पर विचार करना समीचीन है। परिवार को सीमित रखने के प्रयत्न में ही परिवार-कल्याण का भाव निहित है। मनुष्य को यह बात भली प्रकार समझ लेनी चाहिए कि परिवार को बिना सोचे-समझे बढ़ाते चले जाना मूर्खता के सिवाय कुछ नहीं है। यह दुर्भाग्य की बात है कि हमारे देश की जनसंख्या में अंधाधुंध वृद्धि हो रही है, जिसके परिणामस्वरूप परिवार-कल्याण का कार्य पिछड़ जाता है। परिवार के सभी लोगों को सुख-समृद्धि तभी प्राप्त होगी, जब परिवार के सदस्यों की संख्या सीमित होगी। एक व्यक्ति की आय को बाँटने वाले जब कम होंगे, तब उसे पाने वालों को अधिक धन की प्राप्ति होगी। जनसंख्या-वृद्धि ने देश के सम्मुख ऐसी विकट समस्याएँ उपस्थित कर दी हैं कि उनका हल खोजना कठिन होता चला जा रहा है। जिधर देखो, उधर ही लंबी-लंबी कतारें दिखाई देती हैं। इसी कारण नौकरी के अवसरों की भी कमी होती चली जा रही है। परिणामस्वरूप बेरोज़गारी बढ़ती जा रही है।

यह प्रश्न विचारणीय है कि परिवार-नियोजन को ध्यान में रखते हुए परिवार को छोटा कैसे रखा जाए? इसके लिए आम जनता में चेतना जाग्रत करनी होगी। जनसंख्या-शिक्षा भी इस विषय में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। लोगों को समझाया जाना चाहिए कि जनसंख्या-वृद्धि से उनके परिवार को किन-किन कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। अन्न का अभाव, परिवहन-सुविधा में कमी, चिकित्सा में कठिनाई, शिक्षा तथा नौकरी के अवसरों में कमी आदि का प्रत्यक्ष प्रभाव हम सभी पर पड़ेगा। परिणामस्वरूप परिवार की ही नहीं, पूरे समाज की सुख-सुविधा में कमी आ जाएगी।

1. **परिवार-कल्याण का भाव किसमें निहित है–**
(क) परिवार के पालन-पोषण में (ख) परिवार को समृद्ध करने में
(ग) परिवार को सीमित रखने में (घ) परिवार को बढ़ाने में।

2. **परिवार के लोगों को सुख-समृद्धि कब प्राप्त होगी–**
(क) जब वे खूब पैसा कमाएँगे
(ख) जब वे खूब परिश्रम करेंगे
(ग) जब वे संख्या में अधिक होंगे
(घ) जब उनकी संख्या सीमित होगी।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–हमारे देश की जनसंख्या में अंधाधुंध वृद्धि हो रही है।
कारण (R)–इससे परिवार-कल्याण का कार्य पिछड़ रहा है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **'जनसंख्या वृद्धि ने देश के सम्मुख विकट समस्याएँ खड़ी कर दी हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. हर तरफ लंबी-लंबी कतारें दिखाई देती हैं।
2. बेरोज़गारी बढ़ती जा रही है।
3. भोजन की कोई कमी नहीं है।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. **परिवार-कल्याण का तात्पर्य है–**

(क) परिवार को बड़ा करना
(ख) परिवार को शिक्षित करना
(ग) परिवार को सीमित करना
(घ) परिवार को व्यवस्थित करना।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(7) पढ़ाई में या काम के दौरान ऐसे कई अवसर आते हैं, जब आप उपेक्षित और खिन्न महसूस करते हैं। न चाहते हुए भी कई बार दिन की शुरूआत अनचाही समस्याओं से होती है। ऐसे समय में खुद पर आपका भरोसा कम हो जाता है। आप इस स्थिति से उबरने के लिए हर तरह के उपाय आजमाते हैं–प्रार्थना करते हैं; मंदिर-मसज़िद जाते हैं; ज्योतिषी या तांत्रिक के चक्कर काटते हैं, पर इस बात का विश्लेषण नहीं करते कि आखिर इस परिस्थिति से निकलने के लिए क्या प्रयास किए जाएँ और यह संकट आया क्यों? दरअसल हम अपनी समस्याओं की चर्चा बहुत बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं और दूसरों की सहानुभूति चाहते हैं, लेकिन सहानुभूति या दया से समस्या हल नहीं होती। हम रात-दिन उसी मुसीबत के बारे में सोचते रहते हैं और इस प्रकार वह पूरी तरह हमारे दिलो-दिमाग पर छा जाती है। यह हमारे ऑफ़िस के और घर के कामों को भी प्रभावित करने लगती है। इससे पूरा परिवार तनाव में आ जाता है; क्योंकि वह भावनात्मक रूप से आपसे मज़बूती से जुड़ा होता है, वह हमेशा आपको ही सही मानता है। इस पूरी प्रक्रिया में यदि हम स्वयं अपने कार्यों का मूल्यांकन करें तो हो सकता है, ऐसी स्थिति से बाहर निकलने में मदद मिल जाए। परिस्थितियों का ठीक-ठाक मूल्यांकन करके आप आसानी से समाधान तक पहुँच सकते हैं। किसी भी समस्या का हल उसकी जड़ में होता है। यदि आप समस्या की जड़ तक पहुँच गए तो समाधान असंभव नहीं होगा।

1. **मुसीबत के समय हम मंदिर-मसज़िद क्यों जाते हैं–**

(क) भगवान हमारी मुसीबत दूर कर देगा
(ख) स्वयं पर हमारा भरोसा कम हो जाता है
(ग) हम मुसीबत का दोष भगवान पर मढ़ देते हैं
(घ) हम स्वयं कुछ करना नहीं चाहते।

2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–कई बार दिन की शुरूआत अनचाही समस्याओं से होती है।

कारण (R)–ऐसे में खुद पर भरोसा कम हो जाता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **'हम रात-दिन अपनी मुसीबत के बारे में सोचते हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. वह हमारे दिलो-दिमाग पर छा जाती है।
2. घर और दफ़्तर के कामों को प्रभावित करती है।
3. उससे छुटकारा मिल जाता है।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

4. **'समस्या की जड़ तक पहुँचने' का क्या अर्थ है–**

(क) समस्या के प्रभाव को जानने का प्रयास
(ख) समस्या के समाधान को जानने का प्रयास
(ग) समस्या के मूल कारण को जानना
(घ) समस्या की जाँच-पड़ताल करना।

5. **'प्रभावित' में कौन-सा प्रत्यय है–**

(क) वित (ख) त
(ग) आवित (घ) इत।

उत्तर— **1.** (ख) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(8) वास्तव में मनुष्य स्वयं को देख नहीं पाता। उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को देखते हैं, उसका हृदय दूसरों के दोषों का अनुभव करता है। उसकी वाणी दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण कर सकती है, किंतु उसका अपना चरित्र, उसके अपने दोष एवं उसके अवगुण, मिथ्याभिमान और थोथे आत्मगौरव के काले आवरण में इस प्रकार छिपे रहते हैं कि जीवनपर्यंत उसे दिखाई नहीं देते। इसीलिए मनुष्य स्वयं को सर्वगुणसंपन्न देवता समझ बैठता है। आत्मविश्लेषण करना कोई सहज कार्य नहीं है। इसके लिए अत्यंत उदारता, सहनशीलता एवं महानता की आवश्यकता होती है। अपने गुणों-अवगुणों की अनुभूति मनुष्य को सदैव रहती है। अपने दोषों से वह हर पल अवगत रहता है, किंतु अपने दोषों को मानने के लिए तैयार न रहना ही उसकी दुर्बलता होती है और यही उसे आत्मविश्लेषण की क्षमता नहीं दे पाती। उसमें इतनी उदारता और हृदय की विशालता ही नहीं होती कि वह अपने दोषों को देखकर स्वयं कह सके। इसके विपरीत पर-निंदा में अपना कुछ नहीं बिगड़ता, उल्टे मनुष्य आनंद का अनुभव करता है। अपने दोष देखने से मनुष्य के अहंकार को चोट पहुँचती है।

1. **आत्मविश्लेषण के लिए क्या आवश्यक है–**

(क) अनुभूति और अहंकार
(ख) थोथा आत्मगौरव व अभिमान
(ग) उदारता, सहनशीलता एवं महानता
(घ) अवगुण व दोष।

2. **मनुष्य स्वयं को क्यों नहीं देख पाता–**

(क) क्योंकि वह स्वयं को देखना ही नहीं चाहता
(ख) क्योंकि उसके नेत्र स्वयं को देख ही नहीं पाते
(ग) मिथ्याभिमान, आत्मगौरव और अहंकार के कारण
(घ) आत्मविश्लेषण की क्षमता न होने के कारण।

3. **मनुष्य स्वयं को सर्वगुणसंपन्न देवता क्यों समझता है–**

(क) मिथ्याभिमान और खोखले आत्मगौरव के काले आवरण में अपने दोष छिपाए रखने के कारण
(ख) हमेशा दूसरों के अवगुणों का विश्लेषण करते रहने के कारण
(ग) उदारता और हृदय की विशालता की कमी के कारण
(घ) दूसरों का सही मूल्यांकन न कर पाने के कारण।

4. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–वास्तव में मनुष्य स्वयं को ही देख पाता है।

कारण (R)–उसके नेत्र दूसरों के चरित्र को नहीं देखते हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. **'मनुष्य को अपने दोष जीवनपर्यंत दिखाई नहीं देते।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
1. वह स्वयं को सर्वगुणसंपन्न देवता समझ बैठता है।
2. उसे सब अच्छे दिखाई देते हैं।
3. वह स्वयं को हीन समझने लगता है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (क)।

(9) मनुष्य नाशवान प्राणी है। वह जन्म लेने के बाद मरता अवश्य है। अन्य लोगों की भाँति महापुरुष भी नाशवान हैं। वे भी समय आने पर अपना शरीर छोड़ देते हैं, पर वे मरकर भी अमर हो जाते हैं। वे अपने पीछे छोड़े गए कार्य के कारण अन्य लोगों द्वारा याद किए जाते हैं। उनके ये कार्य चिरस्थायी होते हैं और समय के साथ-साथ परिणाम और बल में बढ़ते जाते हैं। ऐसे कार्य के पीछे जो उच्च आदर्श होते हैं, वे स्थायी होते हैं और बदली परिस्थितियों में नए वातावरण के अनुसार, अपने को ढाल लेते हैं। संसार ने पिछली पच्चीस शताब्दियों से भी अधिक में जितने भी महापुरुषों को जन्म दिया है, उनमें गांधीजी को यदि आज भी नहीं माना जाता तो भी भविष्य में उन्हें सबसे बड़ा माना जाएगा, क्योंकि उन्होंने अपने जीवन की गतिविधियों को विभिन्न भागों में नहीं बाँटा, बल्कि जीवनधारा को सदा एक और अविभाज्य माना। जिन्हें हम सामाजिक, आर्थिक और नैतिक के नाम से पुकारते हैं, वे वास्तव में उसी धारा की उपधाराएँ हैं, उसी भवन के अलग-अलग पहलू हैं। गांधीजी ने मानव-जीवन के इस नव-कथानक की व्याख्या न किसी हृदय को स्पर्श करने वाले वीरकाव्य की भाँति की और न ही किसी दार्शनिक महाकाव्य की भाँति ही। उन्होंने मनुष्यों की आत्मा में अपने को निम्नतम रूप में उचित कार्य के प्रति निष्ठा, किसी ध्येय की पूर्ति के लिए सेवा और किसी विचार के प्रति स्वार्पण के बीच सतत चलने वाले संघर्ष के नाटक की भाँति माना है। उन्होंने सदा साध्य को ही महत्त्व नहीं दिया, बल्कि उस साध्य को पूरा करने के लिए अपनाए जाने वाले साधनों का भी ध्यान रखा। साध्य के साथ-साथ उसकी पूर्ति के लिए अपनाए गए साधन भी उपयुक्त होने चाहिए।

1. **मनुष्य कैसा प्राणी है–**
(क) अमर (ख) अजर
(ग) नाशवान (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. **महापुरुष किस कारण याद किए जाते हैं–**
(क) अपने कार्यों के कारण (ख) अपने सम्मान के कारण
(ग) अपने ज्ञान के कारण (घ) अपने धन के कारण।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–मनुष्य नाशवान प्राणी है।
कारण (R)–वह जन्म लेने के बाद मरता अवश्य है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **'महापुरुष अपने कार्यों के कारण अमर हो जाते हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
1. महापुरुषों के कार्य चिरस्थायी होते हैं।
2. वे समय के साथ-साथ परिणाम और बल में बढ़ते जाते हैं।
3. वे कार्य एक दिन निरर्थक हो जाते हैं।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 1 और 2 सही हैं (घ) 3 सही है।

5. **गांधीजी को भविष्य में सबसे बड़ा क्यों माना जाएगा–**
(क) उन्होंने जीवनधारा को विभिन्न भागों में नहीं बाँटा
(ख) उन्होंने जीवनधारा को विभाजित कर दिया
(ग) उन्होंने जीवनधारा का निर्माण किया
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (क)।

(10) वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के उद्दंड परिणामों से अपने को सुरक्षित रखकर हम उनका उपयोग अपनी रीति से किस प्रकार करें–इस बारे में दो बातों का हमें बराबर ध्यान रखना है। पहली बात तो यह है कि हर प्रकार की प्रकृतिजन्य और मानवकृत विपदाओं के पड़ने पर भी हम लोगों की सृजनात्मक शक्ति कम नहीं हुई। हमारे देश में साम्राज्य बने और मिटे, विभिन्न संप्रदायों का उत्थान-पतन हुआ, हम विदेशियों से आक्रांत और पद-दलित हुए, हम पर प्रकृति और मानवों ने अनेक बार मुसीबतों के पहाड़ ढा दिए, पर फिर भी हम लोग बने रहे, हमारी संस्कृति बनी रही और हमारा जीवन एवं सृजनात्मक शक्ति बनी रही। हम अपने दुर्दिनों में भी ऐसे मनीषियों और कर्मयोगियों को पैदा कर सके, जो संसार के इतिहास के किसी युग के अत्यंत उच्च आसन के अधिकारी होते। अपनी दासता के दिनों में हमने गांधी जैसे कर्मठ, धर्मनिष्ठ क्रांतिकारी को, रवींद्र जैसे मनीषी कवि को और अरविंद तथा रमण महर्षि जैसे योगियों को पैदा किया और उन्हीं दिनों में हमने ऐसे अनेक उद्भट विद्वान और वैज्ञानिक पैदा किए, जिनका सिक्का संसार मानता है। हमारी सामूहिक चेतना ऐसे नैतिक आधार पर ठहरी हुई है, जो पहाड़ों से भी मज़बूत, समुद्रों से भी गहरी और आकाश से भी अधिक व्यापक होने के कारण ही हम अपने आध्यात्मिक और बौद्धिक गौरव को बनाए रख सके।
दूसरे, संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है। इसी नैतिक चेतना के सूत्र से हमारे नगर और ग्राम, हमारे देश और संप्रदाय, हमारे विभिन्न वर्ग और जातियाँ आपस में बँधी हुई हैं। बापू ने जन-साधारण को बुद्धिजीवियों के नेतृत्व में क्रांति के लिए तत्पर करने के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था। जन-साधारण के हृदय में धड़कती चेतना को क्रांति की शक्ति बनाने में ही बापू की दूरदर्शिता थी और इसी में उनकी सफलता भी।

1. **हमें किस बात ने सोचने के लिए मज़बूर किया–**
(क) प्राकृतिक आपदाओं ने
(ख) दूसरे देशों की उन्नति ने
(ग) वैज्ञानिक और औद्योगिक विकास के दुष्परिणामों ने
(घ) देश में बढ़ रहे भ्रष्टाचार ने।

2. **विपरीत परिस्थितियों और आपदाओं में भी भारतीयों ने किसे बनाए रखा–**
(क) अपनी संस्कृति और सृजनात्मक शक्ति को
(ख) अपनी एकता और अखंडता को
(ग) परस्पर लड़ने के स्वभाव को
(घ) अत्याचार सहने की शक्ति को।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–हमारे ऊपर अनेक प्रकृतिजन्य और मानवकृत विपदाएँ आई हैं।
कारण (R)–हम लोगों की सृजनात्मक शक्ति कम नहीं हुई।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. 'संस्कृति अथवा सामूहिक चेतना ही हमारे देश का प्राण है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–
1. इस नैतिक चेतना के सूत्र से हम परस्पर बँधे हैं।
2. बापू ने क्रांति के लिए इसी नैतिक चेतना का सहारा लिया था।
3. यह नैतिक चेतना अब विलुप्त हो गई है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. हमारी सामूहिक चेतना का नैतिक आधार है–
(क) पहाड़ों से भी मज़बूत (ख) समुद्र से भी गहरा
(ग) आकाश से भी व्यापक (घ) ये सभी।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(11) आज हम सभी परेशान हैं कि समय पर वर्षा नहीं होती। कहीं अतिवृष्टि होती है, कहीं अल्पवृष्टि तो कहीं अनावृष्टि। पिछली सदी के पूर्वार्द्ध की अपेक्षा उत्तरार्द्ध में मौसम-चक्र बहुत कुछ बदल गया है और अब तो अनिश्चित-सा हो गया है। पहले हर मौसम प्रायः समय पर आता था और वर्षा नियमित रूप से होती थी। यह स्थिति केवल भारत की नहीं है, बल्कि संपूर्ण विश्व की है। कहीं इतनी वर्षा होती है कि बाढ़ के कारण जन और धन की अपार हानि होती है तो कहीं बिलकुल वर्षा नहीं होती, जिससे खड़ी फ़सलें खेत में नष्ट हो जाती हैं। कुछ देशों में बर्फ़ इतनी गिरती है कि जन-जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है। कभी-कभी जब फ़सल पक जाती है, तब मूसलाधार वर्षा हो जाती है, जिससे अन्न को घर लाना असंभव हो जाता है। वायुमंडल में प्रदूषण और प्रकृति-असंतुलन के कारण भारत के अधिकांश भागों में सन् 1987 में बीसवीं शताब्दी का सबसे भयंकर सूखा पड़ा। साथ ही पूर्वी भारत में बाढ़ के भीषण प्रकोप से जन-धन की काफ़ी हानि हुई। यह प्राकृतिक विपदा मनुष्य-निर्मित है; क्योंकि मनुष्य स्वयं प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहा है। मौसम में इस तरह के बदलाव से सामान्यजन पीड़ित हैं और वैज्ञानिक चिंतित।

वैज्ञानिक खोजों से पता चलता है कि मौसम में परिवर्तन का कारण तथा फेफड़ों में कैंसर व हृदय के रोगों एवं मानसिक तनाव आदि का मुख्य कारण है–प्रकृति में असंतुलन। हम सभी जानते हैं कि धरती पर जीवन प्रकृति-संतुलन से ही संभव हो सका है।

1. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A)–मौसम-चक्र बहुत कुछ बदल गया है।
कारण (R)–वर्षा अब समय पर होती है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. 'प्राकृतिक विपदाएँ मनुष्य निर्मित हैं?' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–
1. मनुष्य प्रकृति का संतुलन बिगाड़ रहा है।
2. मनुष्य विपदा का विरोधी है।
3. मनुष्य विपदा का आह्वान करता है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

3. वैज्ञानिकों के अनुसार, मौसम चक्र में परिवर्तन का मुख्य कारण है–
(क) जनसंख्या-वृद्धि (ख) अधिक वृक्षारोपण
(ग) प्रकृति में असंतुलन (घ) परमाणु परीक्षण।

4. धरती पर जीवन संभव है–
(क) पर्यावरण-प्रदूषण से (ख) मौसम में परिवर्तन से
(ग) अधिक वृक्षारोपण से (घ) प्रकृति-संतुलन से।

5. प्रकृति-असंतुलन से होने वाली व्याधि है–
(क) फेफड़ों का कैंसर (ख) हृदय रोग
(ग) मानसिक तनाव (घ) ये सभी।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(12) एक ज़माना था, जब मुहल्लेदारी पारिवारिक आत्मीयता से भरी होती थी। सब मिल-जुलकर रहते थे। हारी-बारी, खुशी-गम, सब में लोग एक-दूसरे के साथ थे। किसी का किसी से कुछ छिपा नहीं था। आज के लोगों को शायद लगे कि लोगों की अपनी 'प्राइवेसी' क्या रही होगी, लेकिन इस 'प्राइवेसी' के नाम पर ही तो हम एक-दूसरे से कटते रहे और कटते-कटते ऐसे अलग हुए कि अकेले पड़ गए। पहले अलग चूल्हे-चौके हुए, फिर अलग मकान लेकर लोग रहने लगे, निजी स्वतंत्रता को अपनी नई परिभाषा देकर यह एकाकीपन हमने स्वयं अपनाया है। मुहल्ले में आपस में चाहे जितनी चखचख हो, यह थोड़े ही संभव था कि बाहर का कोई आकर किसी को कड़वी बात कह जाए। पूरा मुहल्ला टिड्डी-दल की तरह उमड़ पड़ता था।

देखते-देखते ज़माना हवा हो गया। मुहल्लेदारी टूटने लगी, आबादी बढ़ी, महँगाई बढ़ी, पर सबसे ज़्यादा जो चीज़ दुर्लभ हो गई वह थी आपसी लगाव, अपनापन। लोगों की आँखों का शील मर गया।

देखते-देखते कैसा रंग बदला है! लोग अपने-आप में सिमटकर पैसे के पीछे भागे जा रहे हैं। सारे नाते-रिश्तों को उन्होंने ताक पर रख दिया है, तब फिर पड़ोसी से उन्हें क्या लेना-देना है। यह नीरस महानगरीय सभ्यता महानगरों से चलकर कस्बों और देहातों तक को अपनी चपेट में ले चुकी है। मकानों में रहने वाले एक-दूसरे को नहीं जानते। इन जगहों में आदमी का अस्तित्व समाप्त हो गया है। यदि आपको फ्लैट नंबर मालूम नहीं है तो उसी बिल्डिंग में जाकर भी वांछित व्यक्ति को नहीं ढूँढ़ पाएँगे। ऐसी जगहों में किसी प्रकार के संबंध की अपेक्षा ही कहाँ की जा सकती है?

1. 'प्राइवेसी' से क्या तात्पर्य है–
(क) निजता (ख) आत्मीयता
(ग) मेल-जोल (घ) भाईचारा।

2. मुहल्लेदारी के बारे में क्या सच नहीं है–
(क) आपस में मिल-जुलकर रहना
(ख) दुःख-सुख में साथ देना
(ग) अपनी बात किसी से गुप्त न रखना
(घ) आस-पड़ोस का हस्तक्षेप पसंद न करना।

3. आजकल के व्यक्ति को 'प्राइवेसी' के नाम पर प्राप्त हुआ है–
(क) अलगाव और अकेलापन
(ख) अपने में ही सीमित होने का आनंद
(ग) संयुक्त परिवार की समस्याओं से मुक्ति
(घ) मुहल्ले के झंझटों से छुटकारा।

4. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A)–पहले मुहल्लेदारी पारिवारिक आत्मीयता से भरी होती थी।
कारण (R)–पूरा मुहल्ला टिड्डी दल की तरह उमड़ पड़ता था।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. **'देखते-देखते जमाना हवा हो गया।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. मुहल्लेदारी टूटने लगी।
2. अपनापन दुर्लभ हो गया।
3. आपसी लगाव बढ़ गया।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(13) प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती। इसके आगे सारी समस्याएँ बौनी हैं, लेकिन समस्या एक प्रतिभा को खुद दूसरी प्रतिभा से होती है। बहुमुखी प्रतिभा का होना, अपने भीतर एक प्रतिभा के बजाय दूसरी प्रतिभा को खड़ा करना है। इससे हमारा नुकसान होता है। कितना और कैसे?

मन की दुनिया की एक विशेषज्ञ कहती हैं कि बहुमुखी होना आसान है, बजाय एक खास विषय के विशेषज्ञ होने की तुलना में। बहुमुखी लोग स्पर्धा से घबराते हैं। कई विषयों पर उनकी पकड़ इसलिए होती है कि वे एक में स्पर्धा होने पर दूसरे की ओर भागते हैं। वे आलोचना से भी डरते हैं और अपने काम में तारीफ़ सुनना चाहते हैं। बहुमुखी लोगों में सबसे महान माने जाने वाले माइकल एंजेलो से लेकर अपने यहाँ रवींद्रनाथ टैगोर जैसे कई लोग, लेकिन आज ऐसे लोगों की पूछ-परख कम होती है। ऐसे लोग प्रतिभाशाली आज भी माने जाते हैं, लेकिन असफल होने की आशंका उनके लिए अधिक होती है। आज वे लोग 'विंची सिंड्रोम' से पीड़ित माने जाते हैं, जिनकी पकड़ दो-तीन या इससे ज़्यादा क्षेत्रों में हो, लेकिन हर क्षेत्र में उनसे बेहतर उम्मीदवार मौजूद हों।

बहुमुखी प्रतिभा वाले लोगों के भीतर कई कामों को साकार करने की इच्छा बहुत तीव्र होती है। उनकी उत्सुकता उन्हें एक-से-दूसरे क्षेत्र में हाथ आज़माने को बाध्य करती है। समस्या तब होती है, जब यह हाथ आज़माना दखल करने जैसा हो जाता है। वे न इधर के रह जाते हैं, और न उधर के। प्रबंधन की दुनिया में—'एक के साधे सब सधे, सब साधे सब जाए' का मंत्र ही शुरू से प्रभावी है। यहाँ उस पर ज़्यादा फोकस नहीं किया जाता, जो सारे अंडे एक टोकरी में न रखने की बात करता है। हम दूसरे क्षेत्रों में हाथ आज़मा सकते हैं, पर एक क्षेत्र के महारथी होने में ब्रेकर की भूमिका न अदा करें।

1. **किसके आगे सारी समस्याएँ बौनी हैं–**

(क) धन के आगे (ख) बल के आगे
(ग) प्रतिभा के आगे (घ) साधन के आगे।

2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–प्रतिभा किसी की मोहताज नहीं होती।
कारण (R)–प्रतिभा के आगे समस्याएँ बड़ी हो जाती हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **'बहुमुखी लोग स्पर्धा से घबराते हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. वे एक विषय में स्पर्धा होने पर दूसरे में भागते हैं।
2. वे आलोचना से डरते हैं।
3. वे अपनी प्रशंसा नहीं सुनना चाहते।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

4. **बहुमुखी प्रतिभा वालों में किसे महान माना गया है–**

(क) रवींद्रनाथ टैगोर को (ख) न्यूटन को
(ग) माइकल एंजेलो को (घ) गांधीजी को।

5. **प्रबंधन के क्षेत्र में कैसे लोगों की आवश्यकता होती है–**

(क) जो एक उपाय से सभी समस्याओं का समाधान कर सकें
(ख) जो सारे अंडे एक टोकरी में न रखने की बात करते हैं
(ग) जो हर व्यक्ति के लिए अलग-अलग नियमों के पक्षधर होते हैं
(घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (क)।

(14) वर्तमान युग कंप्यूटर युग है। यदि भारतवर्ष पर नज़र दौड़ाकर देखें तो हम पाएँगे कि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रवेश हो गया है। बैंक, रेलवे-स्टेशन, हवाई-अड्डे, डाकखाने, बड़े-बड़े उद्योग-कारखाने व्यवसाय हिसाब-किताब, रुपये गिनने तक की मशीनें कंप्यूटरीकृत हो गई हैं। अब भी यह कंप्यूटर का प्रारंभिक प्रयोग है। आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का संकेत दे रहा है। प्रश्न उठता है कि क्या कंप्यूटर आज की ज़रूरत है? इसका उत्तर है–कंप्यूटर जीवन की मूलभूत अनिवार्य वस्तु तो नहीं है, किंतु इसके बिना आज की दुनिया अधूरी जान पड़ती है। सांसारिक गतिविधियों, परिवहन और संचार उपकरणों आदि का ऐसा विस्तार हो गया है कि उन्हें सुचारु रूप से चलाना अत्यंत कठिन होता जा रहा है।

पहले मनुष्य जीवन-भर में अगर सौ लोगों के संपर्क में आता था तो आज वह दो-हज़ार लोगों के संपर्क में आता है। पहले दिन में पाँच-दस लोगों से मिलता था तो आज पचास-सौ लोगों से मिलता है। पहले वह दिन में काम करता था तो आज रातें भी व्यस्त रहती हैं। आज व्यक्ति के संपर्क बढ़ रहे हैं, व्यापार बढ़ रहे हैं, गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, आकांक्षाएँ बढ़ रही हैं, साधन बढ़ रहे हैं। इस अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की समस्या आज की प्रमुख समस्या है। कहते हैं आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इस आवश्यकता ने अपने अनुसार निदान ढूँढ़ लिया है।

कंप्यूटर एक ऐसी स्वचालित प्रणाली है, जो कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सकती है। हड़बड़ी में होने वाली मानवीय भूलों के लिए कंप्यूटर रामबाण औषधि है। क्रिकेट के मैदान में अंपायर की निर्णायक भूमिका हो या लाखों-करोड़ों की लंबी-लंबी गणनाएँ कंप्यूटर पलक झपकते ही आपकी समस्या हल कर सकता है। पहले इन कामों को करने वाले कर्मचारी हड़बड़ाकर काम करते थे, एक भूल से घबराकर और अधिक गड़बड़ी करते थे। परिणामस्वरूप काम कम, तनाव अधिक होता था। अब कंप्यूटर की सहायता से काफ़ी सुविधा हो गई है।

1. **वर्तमान युग कंप्यूटर का युग क्यों है–**

(क) कंप्यूटर के बिना जीवन की कल्पना असंभव सी हो गई है
(ख) कंप्यूटर ने पूरे विश्व के लोगों को जोड़ दिया है
(ग) कंप्यूटर जीवन की अनिवार्य मूलभूत वस्तु बन गया है
(घ) कंप्यूटर मानव सभ्यता के सभी अंगों का अभिन्न अवयव बन चुका है।

2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–यह कंप्यूटर के प्रारंभिक प्रयोग का युग है।
कारण (R)–आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का युग होगा।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **'कंप्यूटर एक स्वचालित प्रणाली है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. यह कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सकती है।
2. यह सुविधाजनक नहीं है।
3. यह मानवीय भूलों के लिए रामबाण औषधि है।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 3 सही हैं।

4. **कंप्यूटर के प्रयोग से पहले अधिक तनाव क्यों होता था–**

(क) लंबी-लंबी गणनाएँ करनी पड़ती थीं
(ख) गलतियों के डर से कर्मचारी घबराए रहते थे
(ग) क्रिकेट मैचों में गलत निर्णय का ख़तरा रहता था
(घ) मानवीय भूलों के कारण बड़ी दुर्घटनाएँ होती थीं।

5. **कंप्यूटर के बिना आज की दुनिया अधूरी है; क्योंकि–**

(क) सारी व्यवस्था, उपकरण और मशीनें कंप्यूटरीकृत हैं
(ख) कंप्यूटर ही मानव एकीकरण का आधार है
(ग) कंप्यूटर ने सारी प्रक्रियाएँ आसान बना दी हैं
(घ) कंप्यूटर द्वारा मानव सभ्यता अधिक समर्थ हो गई है।

उत्तर– **1.** (क) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(15) अपनी सभ्यता का जब मैं अवलोकन करता हूँ, तब लोगों के काम के संबंध की उनकी विचारधारा के अनुसार, उन्हें विभाजित करने लगता हूँ। एक वर्ग में वे लोग आते हैं, जो काम को उस घृणित आवश्यकता के रूप में देखते हैं, जिसकी उनके लिए उपयोगिता केवल धन अर्जित करना है। वे अनुभव करते हैं कि जब दिनभर का श्रम समाप्त हो जाता है, तब वे जीना सचमुच शुरू करते हैं और अपने आप में होते हैं। जब वे काम में लगे होते हैं, तब उनका मन भटकता रहता है। काम को वे उतना महत्त्व देने का कभी विचार नहीं करते, क्योंकि केवल आमदनी के लिए ही उन्हें काम की आवश्यकता है। दूसरे वर्ग के लोग अपने काम को आनंद और आत्मपरितोष पाने के एक सुयोग के रूप में देखते हैं। वे धन इसलिए कमाना चाहते हैं, ताकि अपने काम में अधिक एकनिष्ठता के साथ समर्पित हो सकें। जिस काम में वे संलग्न होते हैं, उसकी पूजा करते हैं।

पहले वर्ग में केवल वे लोग ही नहीं आते हैं, जो बहुत कठिन और अरुचिकर काम करते हैं। उसमें बहुत-से संपन्न लोग भी सम्मिलित हैं, जो वास्तव में कोई काम नहीं करते हैं। ये सभी धन को ऐसा कुछ समझते हैं, जो उन्हें काम करने के अभिशाप से बचाता है। इसके सिवाय कि उनका भाग्य अच्छा रहा है, वे अन्यथा उन कारखानों के मज़दूरों की तरह ही हैं, जो अपने दैनिक काम को जीवन का सबसे बड़ा अभिशाप समझते हैं। उनके लिए काम कोई घृणित वस्तु है और धन वांछनीय, क्योंकि काम से छुटकारा पाने के साधन का प्रतिनिधित्व यही धन करता है। यदि काम को वे टाल सकें और फिर भी धन प्राप्त हो जाए, तो खुशी से यही करेंगे।

जो लोग काम में अनुरक्त हैं तथा उसके प्रति समर्पित हैं, ऐसे कलाकार, विद्वान और वैज्ञानिक दूसरे वर्ग में सम्मिलित हैं। वस्तुओं को बनाने और खोजने में वे हमेशा दिलचस्पी रखते हैं। इसके अंतर्गत परंपरागत कारीगर भी आते हैं, जो किसी वस्तु को रूप देने में गर्व और आनंद का वास्तविक अनुभव करते हैं। अपनी मशीनों को ममत्वभरी सावधानी से चलाने और उनका रखरखाव करने वाले कुशल मिस्त्री और इंजीनियर इसी वर्ग से संबंधित हैं।

1. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A) –पहले वर्ग के लोग काम को महत्त्व देने का कभी विचार नहीं करते।

कारण (R) –उन्हें केवल आमदनी के लिए काम की आवश्यकता होती है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. **'दूसरे वर्ग के लोग काम को आनंद और आत्मपरितोष पाने के सुयोग के रूप में देखते हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. वे अपने काम की पूजा करते हैं।
2. उनका ध्येय केवल धन कमाना है।
3. वे काम न करने को सुख मानते हैं।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 3 सही हैं।

3. **पहले वर्ग में कौन लोग आते हैं–**

(क) जो कार्य को पूजा मानते हैं
(ख) जो कार्य को घृणित और धनार्जन का साधन मानते हैं
(ग) जो कार्य में संतोष का अनुभव करते हैं
(घ) जो कार्य से कभी जी नहीं चुराते।

4. **दूसरे वर्ग के लोगों का कार्य के विषय में क्या दृष्टिकोण है–**

(क) वे कार्य को बोझ समझते हैं
(ख) वे कार्य को तुच्छ मानते हैं
(ग) वे कार्य को अपना शोषण समझते हैं
(घ) वे कार्य को आनंद और आत्मपरितोष का सुयोग मानते हैं।

5. **काम के प्रति अनुरक्त और समर्पित लोगों के वर्ग में सम्मिलित हैं–**

(क) कलाकार, विद्वान और वैज्ञानिक
(ख) परंपरागत कारीगर
(ग) कुशल मिस्त्री और इंजीनियर
(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(16) मन के भावों के आदान-प्रदान के लिए केवल मनुष्य को ही वाणी का वरदान प्राप्त है। पशु-पक्षी अपने भावों को शारीरिक मुद्राओं और अन्य संकेतों द्वारा प्रकट करते हैं। वाणी के अनेक रूप हैं, जो भाषा या बोली कहलाते हैं। संसार में इस समय भाषा और बोली के तीन हज़ार से भी अधिक रूप प्रचलित हैं। प्रायः सभी स्वतंत्र देशों की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं। उनके साथ स्थानीय बोलियाँ भी हैं, जो भाषा का ही प्रादेशिक रूप हैं। सबसे अधिक सुगम, सरल और स्वाभाविक भाषा मातृभाषा कहलाती है। यह बालक को उसके परिवार से संस्कार के रूप में मिलती है। अन्य भाषाएँ अर्जित भाषाएँ होती हैं, जो अभ्यास द्वारा सीखी जाती हैं। अपने घर-परिवार, वर्ग, जाति और देश के मध्य विचारों के आदान-प्रदान के लिए सबसे सरल भाषा मातृभाषा ही है। अपनी मातृभाषा द्वारा जितनी सहजता से भाव व्यक्त किए जा सकते हैं, वैसी सहज-सामर्थ्य किसी अन्य अर्जित भाषा में नहीं होती। विदेशी शासक जब किसी देश को जीतकर अपने शासन में लेते हैं, तब वे सबसे पहले विजित देश की भाषा के स्थान पर अपनी भाषा को शासन की भाषा बनाते हैं। भाषा के माध्यम से विदेशी शासक अपनी सभ्यता और संस्कृति की छाप विजित देश पर छोड़ते हैं। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र को अपनी भाषा के प्रयोग के संबंध में सावधान रहना चाहिए। राष्ट्र की एकता और पारस्परिक सौहार्द को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए राष्ट्रभाषा की आवश्यकता में किसी को संदेह नहीं है।

1. **भावों के आदान-प्रदान के लिए वाणी का वरदान केवल किसे प्राप्त है–**

(क) पशुओं को (ख) मनुष्य को
(ग) पक्षियों को (घ) इनमें से कोई नहीं।

2. पशु-पक्षी अपने भावों को कैसे प्रकट करते हैं–

(क) शारीरिक मुद्राओं द्वारा (ख) वाणी द्वारा

(ग) भाषा द्वारा (घ) इनमें से कोई नहीं।

3. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)–संसार में भाषा-बोली के तीन हज़ार से अधिक रूप प्रचलित हैं।

कारण (R)–सभी स्वतंत्र देशों की अपनी-अपनी भाषाएँ हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. 'सबसे अधिक सुगम, सरल और स्वाभाविक भाषा मातृभाषा कहलाती है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–

1. यह परिवार से संस्कार के रूप में मिलती है।
2. यह अभ्यास से अर्जित करनी पड़ती है।
3. व्यक्ति इसे शीघ्र भूल जाता है।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है

(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. राष्ट्र की एकता और पारस्परिक सौहार्द को अक्षुण्ण बनाए रखने हेतु क्या आवश्यक है–

(क) अर्जित भाषा (ख) बोली

(ग) राष्ट्रभाषा (घ) मातृभाषा।

उत्तर— 1. (ख) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ग)।

(17) हम इस देश में प्रजातंत्र की स्थापना कर चुके हैं, जिसका अर्थ है–व्यक्ति की पूर्ण स्वतंत्रता, जिसमें वह अपना पूरा विकास कर सके और साथ ही सामूहिक और सामाजिक एकता भी। व्यक्ति और समाज के बीच में विरोध का आभास होता है। व्यक्ति अपनी उन्नति और विकास चाहता है और यदि एक की उन्नति और विकास दूसरे की उन्नति और विकास में बाधक हो तो संघर्ष पैदा होता है और यह संघर्ष तभी दूर हो सकता है, जब सबके विकास के पथ अहिंसा के हों। हमारी सारी संस्कृति का मूलाधार इसी अहिंसा-तत्त्व पर स्थापित रहा है। जहाँ-जहाँ हमारे नैतिक सिद्धांतों का वर्णन आया है, अहिंसा को ही उनमें मुख्य स्थान दिया गया है। अहिंसा का दूसरा नाम या दूसरा रूप त्याग है और हिंसा का दूसरा रूप या दूसरा नाम स्वार्थ है, जो प्रायः भोग के रूप में हमारे सामने आता है, पर हमारी सभ्यता ने तो भोग भी त्याग से ही निकाला है और भोग भी त्याग में ही पाया है। श्रुति कहती है–'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः' इसी के द्वारा हम व्यक्ति-व्यक्ति के बीच का विरोध, व्यक्ति और समाज के बीच का विरोध, समाज और समाज के बीच का विरोध, देश और देश के बीच के विरोध को मिटाना चाहते हैं। हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है। इसीलिए हमने भिन्न-भिन्न विचारधाराओं को स्वच्छंदतापूर्वक अपने-अपने रास्ते बहने दिया। भिन्न-भिन्न धर्मों और संप्रदायों को स्वतंत्रतापूर्वक पनपने और भिन्न-भिन्न भाषाओं को विकसित और प्रस्फुटित होने दिया। भिन्न-भिन्न देशों के लोगों को अपने में अभिन्न भाव से मिल जाने दिया। भिन्न-भिन्न देशों की संस्कृतियों को अपने में मिलाया और अपने को मिलने दिया और देश और विदेश से एकसूत्रता तलवार के ज़ोर से नहीं, बल्कि प्रेम और सौहार्द से स्थापित की।

1. हमारी संस्कृति का मूलाधार है–

(क) संघर्ष (ख) प्रजातंत्र की स्थापना

(ग) अहिंसा (घ) स्वार्थ।

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)–व्यक्ति और समाज के बीच विरोध का आभास होता है।

कारण (R)–व्यक्ति केवल अपनी उन्नति और विकास चाहता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है, और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. 'श्रुति कहती है–तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–

1. हमारी सारी नैतिक चेतना इसी तत्त्व से ओत-प्रोत है।
2. इसके द्वारा हमने सभी प्रकार का विरोध मिटाना चाहा है।
3. हमारी संस्कृति का मूलाधार अहिंसा तत्त्व है।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है

(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

4. समाज और समाज के बीच का विरोध मिट सकता है–

(क) नैतिक चेतना द्वारा (ख) त्याग द्वारा

(ग) हिंसा द्वारा (घ) एकता द्वारा।

5. हमने एकसूत्रता स्थापित की–

(क) त्याग और अहिंसा द्वारा

(ख) प्रेम और सौहार्द द्वारा

(ग) तलवार द्वारा

(घ) उन्नति और विकास द्वारा।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ख)।

(18) ज़िंदगी के असली मज़े उनके लिए नहीं हैं, जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं; बल्कि फूलों की छाँह के नीचे अगर जीवन का कोई स्वाद छिपा है तो वह भी उन्हीं के लिए है, जो दूर रेगिस्तान से आ रहे हैं, जिनका कंठ सूखा हुआ है। ओंठ फटे हुए और सारा वदन पसीने से तर है। पानी में जो अमृत वाला तत्त्व है, उसे वह जानता है, जो धूप में खूब सूख चुका है, वह नहीं जो रेगिस्तान में कभी पड़ा ही नहीं है। सुख देने वाली चीज़ें पहले भी थीं और अब भी हैं। फ़र्क यह है कि जो सुखों का मूल्य चुकाते हैं और उनके मज़े बाद में लेते हैं, उन्हें स्वाद अधिक मिलता है। जिन्हें आराम आसानी से मिल जाता है, उनके लिए आराम ही मौत है। भोजन का असली स्वाद उसी को मिलता है, जो कुछ दिन बिना खाए भी रह सकता है। 'त्यक्तेन भुंजीथाः' जीवन का भोग त्याग के साथ करो, यह केवल परमार्थ का ही उपदेश नहीं है; क्योंकि संयम से भोग करने पर जीवन में जो आनंद प्राप्त होता है, वह निरा भोगी बनकर भोगने से नहीं मिल पाता। महाभारत में देश के प्रायः अधिकांश वीर कौरवों के पक्ष में थे, मगर फिर भी जीत पांडवों की हुई; क्योंकि उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली थी; क्योंकि उन्होंने वनवास के जोखिम को पार किया था। साहस की ज़िंदगी सबसे बड़ी ज़िंदगी होती है। ऐसी ज़िंदगी की सबसे बड़ी पहचान है कि वह बिलकुल निडर, बिलकुल बेखौफ़ होती है। साहसी मनुष्य इस बात की चिंता नहीं करता कि तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं?

1. जो फूलों की छाँह के नीचे खेलते और सोते हैं, उन्हें क्या प्राप्त नहीं होता–

(क) जीवन का सुख (ख) अमृत

(ग) ज़िंदगी के असली मज़े (घ) जीवन का स्वाद।

2. जिसका कंठ सूखा हो, ओंठ फटे हों, बदन पसीने से तर हो, वह पानी के किस तत्त्व को पहचानता है–

(क) स्वाद (ख) अमृत तत्त्व

(ग) प्यास (घ) सुख।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–पानी में एक अमृतवाला तत्त्व होता है।
कारण (R)–उसे वह जानता है, जो धूप में खूब सूख चुका है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. **'महाभारत में पांडवों की विजय हुई।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
1. उन्होंने लाक्षागृह की मुसीबत झेली।
2. उन्होंने वनवास के कष्ट सहन किए।
3. उन्होंने कठोर तपस्या की।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. **तमाशा देखने वाले लोग उसके बारे में क्या सोच रहे हैं, इस बात की चिंता कौन नहीं करता–**
(क) सुखी मनुष्य (ख) कायर मनुष्य
(ग) आलसी मनुष्य (घ) साहसी मनुष्य।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(19) समय एक अमूल्य धन है। समय मनुष्य को बलवान् और निर्बल बनाता है। समय स्वाधीन है और उसके रथ के पहिए निरंतर गतिशील रहते हैं। वे कभी रुकना नहीं जानते। समय की यह गति मनुष्य को प्रभावित करती है। यदि यह कहा जाए कि समय का उतार-चढ़ाव ही मनुष्य-जीवन का उत्थान-पतन है तो अनुचित न होगा। समय ही शिशु को युवक, युवक को वृद्ध और वृद्ध को मृत्यु की गोद में ले जाता है; अतः मनुष्य जीवन के निर्माण, परिवर्तन एवं सुधार में सहायक होने के कारण समय उसके लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। समय सच्चा एवं अमूल्य धन है। यह ईश्वरीय वरदान सबके लिए है। कोई भी इससे वंचित नहीं है। यह एक ऐसी पूँजी है, जो निर्धन और धनवान सभी के पास बिना किसी भेदभाव के उपलब्ध है; अतः इस धन के उपयोग के लिए प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्र है। समय प्रत्येक व्यक्ति को अवसर देता है। जो इसका उपयोग करता है, इस अमूल्य धन का अपव्यय एवं दुरुपयोग नहीं करता, वह मनुष्य अपने भाग्य का स्वयं विधाता बनता है। इसके विपरीत, जो अवसर को हाथ से खो देता है अथवा इसे व्यर्थ ही नष्ट कर देता है, समय उसका सर्वनाश कर देता है। समय का सदुपयोग ही जीवन की सफलता का मूलमंत्र है। हम केवल प्राप्त क्षण का ही उपयोग कर सकते हैं। भविष्य में समय के सदुपयोग के विषय में सोचने वाला व्यक्ति सदा टाल-मटोल की प्रवृत्ति का अभ्यस्त हो जाता है और उसका 'आज' तो 'कल' में बदल जाता है और 'आने वाला कल' कभी-कभी 'न आने वाला कल' हो जाता है; अतः आज को कल पर छोड़ने की प्रवृत्ति समय का सदुपयोग करना नहीं कहलाती।

1. **प्रस्तुत गद्यांश का उचित शीर्षक होगा–**
(क) समय का सदुपयोग (ख) सुनहरा भविष्य
(ग) आने वाला कल (घ) जीवन की सफलता।

2. **समय की गति मनुष्य-जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है–**
(क) समय मनुष्य को बलवान और निर्बल बनाता है
(ख) समय के रथ के पहिए निरंतर गतिशील रहते हैं
(ग) समय का उतार-चढ़ाव ही मनुष्य-जीवन का उत्थान-पतन है
(घ) उपर्युक्त सभी।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–समय की गति मनुष्य को प्रभावित करती है।
कारण (R)–समय का उतार-चढ़ाव मनुष्य-जीवन का उत्थान-पतन है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **'समय सच्चा एवं अमूल्य धन है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
1. यह ईश्वरीय वरदान है, जो सबके लिए है।
2. यह पूँजी धनी और निर्धन सबके पास है।
3. यह धन खर्च नहीं होता है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. **स्वयं का भाग्य-विधाता होता है–**
(क) आज को 'कल' में बदलने वाला
(ख) समय को अमूल्य धन मानने वाला
(ग) समय के सदुपयोग की सोचने वाला
(घ) समय का सदुपयोग करने वाला।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(20) शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य की सभी क्षमताओं का विकास करना है; जिसके अंतर्गत शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक और नैतिक सभी क्षमताएँ सम्मिलित हैं। शिक्षित व्यक्ति अपने शारीरिक विकास का ध्यान रखता है, जिससे वह अपने कर्त्तव्यों का सम्यक् परिपालन कर सके। बौद्धिक विकास से अभिप्राय केवल यह नहीं है कि शिक्षित व्यक्ति कुछ तथ्यों को जान लेता है, बल्कि यह है कि वह जीवन के सभी क्षेत्रों में ऐसा व्यवहार करता है, जो सुबुद्धि-विरोधी न हों। साहित्य और ललित कलाओं के प्रति अनुराग और उनके स्तर की पहचान को भी शिक्षित व्यक्ति का एक आवश्यक गुण समझा जा सकता है। शिक्षित व्यक्ति वैचारिक स्तर पर भी ऊँचा उठ जाता है। उसका 'स्व' विस्तृत होता है; क्योंकि वह 'स्वहित' से अधिक परहित को महत्त्व देता है और देशहित के आगे सबकुछ निछावर कर सकता है। केवल साक्षर होना, पढ़-लिख लेना शिक्षित होना नहीं है। यदि हम विनम्र नहीं हैं, उदार और सहनशील नहीं हैं, देश और समाज को सर्वोपरि नहीं मानते तो हम डिग्रीधारी भले ही हों, शिक्षित कदापि नहीं कहलाएँगे।

1. **शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य क्या है–**
(क) मनुष्य का शारीरिक विकास करना
(ख) मानसिक विकास करना
(ग) भावात्मक विकास करना
(घ) सभी क्षमताओं का विकास करना।

2. **बौद्धिक विकास से लेखक का अभिप्राय है–**
(क) स्वयं का ध्यान रखना
(ख) दूसरों का ध्यान रखना
(ग) कुछ तथ्यों को जान लेना
(घ) सद्बुद्धि-विरोधी व्यवहार न होना।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–शिक्षित व्यक्ति अपने शारीरिक विकास का ध्यान रखता है।

कारण (R)—इससे वह अपने कर्त्तव्यों का सम्यक् परिपालन कर सकता है।

(क) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

4. 'शिक्षित व्यक्ति वैचारिक स्तर पर ऊँचा उठ जाता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–

1. उसका 'स्व' विस्तृत होता है।
2. वह 'स्वहित' से अधिक परहित को महत्त्व देता है।
3. उसके विचार जटिल होते हैं।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है

(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. कोई डिग्रीधारी भी कब शिक्षित नहीं कहलाता–

(क) जब वह विनम्र नहीं होता

(ख) उदार और सहनशील नहीं होता

(ग) देश और समाज को सर्वोपरि नहीं मानता

(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(21) जनसाधारण की भलाई के लिए सरकारी तथा गैर-सरकारी संस्थाओं के कुछ ऐसे विज्ञापन दिए जाते हैं, जिनका लक्ष्य अच्छी सरकार, सामुदायिक विकास, वैज्ञानिक सफलताएँ, शिक्षा-सुधार, सार्वजनिक स्वास्थ्य, वन्य प्राणी-रक्षा, यातायात सुरक्षा तथा धार्मिक एकता को बनाए रखना होता है। इसके अतिरिक्त इनसे बाज़ारों में उपभोक्ता को उत्पाद-वस्तुओं के चयन में सहायता मिलती है। कृषि के क्षेत्र में किसानों को कीटनाशक औषधियों और उनके प्रयोग करने की जानकारी, परिवार-नियोजन तथा बच्चों को टीका लगाने की जानकारी आकाशवाणी तथा दूरदर्शन पर प्रसारित किए जाने वाले विज्ञापनों से मिल सकती है। समाज-कल्याण संबंधी संस्थाओं के विज्ञापनों का मुख्य लक्ष्य जनता में विवेक उत्पन्न करना, उसके जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना, उसका सांस्कृतिक, बौद्धिक तथा आध्यात्मिक विकास करना आदि रहा है। आधुनिक युग में विज्ञापन जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं। उपभोक्ता को शिक्षित करना, उत्पादक को लाभ पहुँचाना, विक्रेता की सहायता करना, उत्पादक तथा उपभोक्ता के बीच मधुर संबंध स्थापित करना तथा लोक-सेवा करना विज्ञापन के प्रमुख कार्य हैं। इस प्रकार आज हमारा संपूर्ण जीवन विज्ञापनमय हो गया है।

1. प्रस्तुत गद्यांश में किसका वर्णन है–

(क) जीवन का (ख) धन का

(ग) विज्ञापन का (घ) विज्ञान का।

2. विज्ञापन से उपभोक्ता को क्या लाभ है–

(क) वस्तुएँ सस्ती मिलती हैं

(ख) वस्तुएँ महँगी मिलती हैं

(ग) वस्तुओं के चयन में सहायता मिलती है

(घ) वस्तुएँ अधिक मिलती हैं।

3. समाज-कल्याण संबंधी संस्थाओं के विज्ञापनों का लक्ष्य है–

(क) जनता में विवेक जगाना

(ख) जीवन-स्तर को ऊँचा उठाना

(ग) जनता का सांस्कृतिक, बौद्धिक, आध्यात्मिक विकास करना

(घ) उपर्युक्त सभी।

4. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)—विज्ञापन उत्पाद वस्तुओं के चयन में सहायक हैं।

कारण (R)—आज हमारा संपूर्ण जीवन विज्ञापनमय हो गया है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. 'आधुनिक युग में विज्ञापन जीवन के अभिन्न अंग बन गए हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–

1. वे उपभोक्ता को शिक्षित और उत्पादक को लाभान्वित करते हैं।
2. उपभोक्ता और उत्पादक के बीच मधुर संबंध स्थापित करते हैं।
3. वे लोगों का मनोरंजन करते हैं।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है

(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(22) प्रायः लोग मोह को बढ़ाकर, तृष्णा को उत्पन्नकर अपनी स्थिति दयनीय बना लेते हैं। प्रभु तो उनकी सहायता करते हैं, जो अपनी सहायता स्वयं करते हैं। आत्मनिर्भरता स्वावलंबियों की आराध्या देवी है। इस देवी-उपासना से उनका आलस्य अंतर्धान हो जाता है, डरकर भाग जाता है, कायरता नष्ट हो जाती है तथा संकोच समाप्त हो जाता है। आत्मविश्वास उत्पन्न होता है, आत्मगौरव जाग्रत होता है। स्वावलंबी व्यक्ति कष्टों और बाधाओं को रौंदता हुआ कंटकाकीर्ण पथ पर निर्भीकतापूर्वक आगे बढ़ता है। स्वावलंबन मानव में गुणों की प्रतिष्ठा करता है। आत्मसम्मान, आत्मविश्वास, आत्मबल, आत्मनिर्भरता, आत्मरक्षा, साहस, संतोष, धैर्य आदि गुण स्वावलंबन के सहोदर हैं। ऐसे महान, प्रचंड, शक्तिसंपन्न, स्वावलंबी मनुष्य समाज तथा राष्ट्र का जीवन हैं। ऐसे व्यक्ति समाज तथा राष्ट्र के लिए बल, गौरव एवं उन्नति के द्वार हैं। सुख, शांति तथा सफलता के प्रदाता हैं, आत्मनिर्भरता के परिचायक हैं, शौर्य, शक्ति तथा समृद्धि के साधन हैं। स्वावलंबन व्यक्ति, राष्ट्र तथा मानवमात्र के जीवन में सर्वांगीण प्राप्ति का महामंत्र है। जीवन का आभूषण है। कर्त्तव्य-श्रृंखला की प्रथम कड़ी है, वीरों तथा कर्मयोगियों का इष्टदेव है और सर्वांगीण उन्नति का आधार है।

1. मोह और तृष्णा को बढ़ाकर लोग क्या करते हैं–

(क) धन कमाते हैं

(ख) यश प्राप्त करते हैं

(ग) अपनी स्थिति दयनीय बना लेते हैं

(घ) उन्नति कर लेते हैं।

2. स्वावलंबियों की आराध्य देवी है–

(क) दुर्गा (ख) सरस्वती

(ग) लक्ष्मी (घ) आत्मनिर्भरता।

3. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–

कथन (A)—प्रायः लोग मोह और तृष्णा से अपनी स्थिति दयनीय बना लेते हैं।

कारण (R)—भगवान ऐसे लोगों की ही सहायता करते हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **'आत्मनिर्भरता स्वावलंबियों की आराध्या देवी है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. इसकी उपासना से उनका आलस्य अंतर्धान हो जाता है।
2. कायरता नष्ट हो जाती है।
3. आत्मबल में कमी आती है।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. **मानव की सर्वांगीण उन्नति का आधार है–**

(क) धन (ख) बल
(ग) मित्र (घ) स्वावलंबन।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(23) संस्कृति एक ऐसी चीज़ है, जिसे लक्षणों से तो हम जान सकते हैं, किंतु उसकी परिभाषा नहीं दे सकते। कुछ अंशों में वह सभ्यता से एक भिन्न गुण है। अंग्रेज़ी में एक कहावत है कि सभ्यता वह चीज़ है, जो हमारे पास है; संस्कृति वह गुण है, जो हममें व्याप्त है। मोटर, महल, सड़क, हवाईजहाज़, पोशाक और अच्छा भोजन, ये तथा इनके समान सारी अन्य स्थूल वस्तुएँ संस्कृति नहीं, सभ्यता के सामान हैं। मगर पोशाक पहनने और भोजन करने में जो कला है, वह संस्कृति की चीज़ है। इसी प्रकार मोटर बनाने और उसका उपयोग करने, महलों के निर्माण में रुचि का परिचय देने और सड़कों तथा हवाईजहाज़ों की रचना में जो ज्ञान लगता है, उसे अर्जित करने में संस्कृति अपने को व्यक्त करती है। हर सुसभ्य आदमी संस्कृत ही होता है, ऐसा नहीं कहा जा सकता; क्योंकि अच्छी पोशाक पहनने वाला आदमी भी तबीयत से नंगा हो सकता है और तबीयत से नंगा होना संस्कृति के खिलाफ़ बात है और यह भी नहीं कहा जा सकता कि हर संस्कृत आदमी सभ्य ही होता है; क्योंकि सभ्यता की पहचान सुख-सुविधा और ठाट-बाट है, मगर बहुत-से ऐसे लोग हैं, जो सड़े-गले झोपड़ों में रहते हैं, जिनके पास काफ़ी कपड़े भी नहीं होते और न कपड़े पहनने के अच्छे ढंग ही उन्हें मालूम होते हैं, लेकिन फिर भी उनमें विनय और सदाचार होता है, वे दूसरे के दुःख से दुःखी होते हैं तथा दूसरों का दुःख दूर करने के लिए वे ख़ुद मुसीबत उठाने को तैयार रहते हैं।

1. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–संस्कृति को लक्षणों से जान सकते हैं।
कारण (R)–उसे परिभाषित भी किया जा सकता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. **'हर सुसभ्य आदमी संस्कृत नहीं होता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
1. अच्छी पोशाक पहनने वाला भी असंस्कृत हो सकता है।
2. सुख-सुविधा संस्कृत होने की पहचान है।
3. सदा खिन्न रहने वाला संस्कृत होता है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 2 और 3 सही हैं।

3. **संस्कृति के खिलाफ़ बात है–**
(क) अच्छे ढंग से कपड़े न पहनना
(ख) दूसरों के दुःख से दुःखी होना
(ग) अच्छी पोशाक पहनना
(घ) तबीयत से नंगा होना।

4. **'तबीयत से नंगा होना' का अर्थ है–**
(क) कम कपड़े पहनने की इच्छा होना
(ख) स्वास्थ्य ठीक न होना
(ग) गंदे विचारों वाला होना
(घ) सड़े-गले झोपड़ों में रहना।

5. **'चरित्रवान्' के अर्थ में किस शब्द का प्रयोग हुआ है–**
(क) सुसभ्य का (ख) संस्कृत का
(ग) संस्कृति का (घ) सभ्यता का।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(24) उपयोगिता का धरातल वह धरातल है, जिस पर मनुष्य और पशु दोनों समान हैं। आहार, निद्रा, भय और मैथुन पशुओं का भी धर्म हैं और मनुष्य का भी। मनुष्य और पशु में मुख्य भेद यह है कि मनुष्य ज्यों-ज्यों सुसंस्कृत होता है, त्यों-त्यों वह अनुपयोगी कार्य अधिक करता जाता है। महलों में उसे खिड़कियाँ चाहिए और खिड़कियों में ख़ूब महीन पर्दे, जो स्वप्न के समान झूलते हों। इनका शायद कुछ उपयोग माना भी जा सके, किंतु दीवार पर चित्र टाँगने का क्या उपयोग है? नाचने, गाने, मूर्ति बनाने और शरीर को प्रसाधन से सज्जित करने का क्या उपयोग है? यह भी ध्यान देने की बात है कि प्रेम की निराशा से आहत होकर पशु आत्महत्या नहीं करते, आत्महत्या केवल मनुष्य करता है। पशु केवल उतने ही कर्म करते हैं, जितने से उनकी जैविक आवश्यकता की पूर्ति हो जाए, किंतु मनुष्य की मनुष्यता तो तब तक आरंभ ही नहीं होती, जब तक वह केवल अपनी जैविक आवश्यकता की पूर्ति में संलग्न है।

अर्थात् श्रेष्ठ साहित्य वह नहीं है, जिसका जीवन में कोई प्रत्यक्ष उपयोग है। श्रेष्ठ साहित्य हम उसे कहेंगे, जो सभी उपयोग की सीमा के पार जन्म लेता है, जिसकी आवाज़ हम शिखर की उस ऊँचाई से सुनते हैं, जो कर्म की तलहटी से दूर है, जो उपयोग की सभी सीमाओं से परे है और जहाँ पहुँचने के लिए तर्कों के सोपान नहीं बनाए जा सकते।

1. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–उपयोगिता के धरातल पर मनुष्य और पशु दोनों समान हैं।
कारण (R)–पशु आत्महत्या नहीं करते, मनुष्य आत्महत्या करता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. **'श्रेष्ठ साहित्य सभी उपयोग की सीमा के पार जन्म लेता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
1. श्रेष्ठ साहित्य की आवाज़ शिखर की ऊँचाई से सुन सकते हैं।
2. वह कर्म की तलहटी से दूर है।
3. वह कठिनाई से समझ में आता है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

3. **मनुष्य और पशु में कौन-सी बात समान है–**
(क) आहार (ख) निद्रा
(ग) भय और मैथुन (घ) ये सभी।

4. **श्रेष्ठ साहित्य वह है–**
(क) जो कर्म की तलहटी से दूर है
(ख) जो उपयोग की सभी सीमाओं से परे है
(ग) जिसकी आवाज़ हम शिखर की ऊँचाई से सुनते हैं
(घ) उपर्युक्त सभी।

5. **'मनुष्यता' कौन-सी संज्ञा है–**
   (क) जातिवाचक (ख) भाववाचक
   (ग) व्यक्तिवाचक (घ) समूहवाचक।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(25) मैंने घूमना शुरू किया। मुझे निरामिष अर्थात् अन्नाहार देने वाले भोजनगृह की खोज करनी थी। घर की मालकिन ने भी कहा था कि खास लंदन में ऐसे गृह मौजूद हैं। मैं रोज़ दस-बारह मील चलता था। किसी मामूली-से भोजनगृह में जाकर पेटभर रोटी खा लेता था, पर उससे संतोष न होता था। इस तरह भटकता हुआ एक दिन मैं फैरिंग्टन स्ट्रीट पहुँचा और वहाँ 'वेजिटेरियन रेस्टरां' (अन्नाहारी भोजनालय) का नाम पढ़ा। मुझे वह आनंद हुआ, जो बालक को मनचाही चीज़ मिलने से होता है। हर्ष-विभोर होकर अंदर घुसने से पहले मैंने दरवाज़े के पास की शीशे वाली खिड़की में बिक्री की पुस्तकें देखीं। उनमें मुझे सॉल्ट की 'अन्नाहार की हिमायत' नामक पुस्तक दिखी। एक शिलिंग में मैंने वह खरीद ली और फिर भोजन करने बैठा। विलायत आने के बाद यहाँ पहली बार भरपेट भोजन मिला। ईश्वर ने मेरी भूख मिटाई।

सॉल्ट की पुस्तक पढ़ी। मुझ पर उसकी अच्छी छाप पड़ी। इस पुस्तक को पढ़ने के दिन से मैं स्वेच्छापूर्वक अर्थात् विचारपूर्वक अन्नाहार में विश्वास करने लगा। माता के निकट की गई प्रतिज्ञा अब मुझे विशेष आनंद देने लगी और जिस तरह अब तक मैं यह मानता था कि सब मांसाहारी बनें तो अच्छा हो, और पहले केवल सत्य की रक्षा के लिए तथा बाद में प्रतिज्ञापालन के लिए ही मैं मांस-त्याग करता था और भविष्य में किसी दिन स्वयं आज़ादी से प्रकट रूप में, मांस खाकर दूसरों को खाने वालों के दल में सम्मिलित करने की उमंग रखता था, उसी तरह अब स्वयं अन्नाहारी रहकर दूसरों को वैसा बनाने का लोभ मुझ में जागा।

1. **लेखक को लंदन में किसकी तलाश थी–**
   (क) अच्छे विद्यालय की (ख) अच्छे विश्रामगृह की
   (ग) अन्नाहार भोजनालय की (घ) इनमें से कोई नहीं।
2. **अन्नाहारी भोजनालय मिलने पर लेखक को कैसा अनुभव हुआ–**
   (क) जैसे ख़ज़ाना मिल गया हो
   (ख) जैसे बालक को मनचाही चीज़ मिल गई हो
   (ग) जैसे प्यासे को पानी मिल गया हो
   (घ) जैसे यात्री को मंजिल मिल गई हो।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–मैं किसी मामूली-से भोजनगृह में भोजन करता था।
   कारण (R)–मुझे उससे संतोष नहीं होता था।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
4. **'मैंने सॉल्ट की पुस्तक पढ़ी।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   1. मुझे पुस्तक अच्छी नहीं लगी।
   2. मुझ पर उसकी अच्छी छाप पड़ी।
   3. मुझ पर उसका दुष्प्रभाव पड़ा।
   (क) 1 सही है (ख) 2 सही है
   (ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।
5. **'अन्नाहार' में कौन-सी संधि है–**
   (क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि
   (ग) वृद्धि संधि (घ) यण् संधि।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (क)।

(26) चीन के महान दार्शनिक संत ताओ बू बीन के पास चुंगसिन नामक एक व्यक्ति पहुँचा, उसने उनसे धर्म की शिक्षा देने की प्रार्थना की, संत ताओ बू ने उस व्यक्ति को कुछ समय तक अपने पास रखा और उसे दीन-दुःखियों की सेवा में लगा दिया। कुछ समय बाद चुंगसिन ने संत जी से निवेदन किया, "महाराज इतने दिन हो गए, आपने मुझे धर्म की शिक्षा नहीं दी। संत ने कहा, तेरा तो जीवन ही धर्ममय हो गया है, फिर मैं धर्म के विषय में तुझे क्या बताता? तू अपने कर्त्तव्यों का पालन निष्ठापूर्वक करता है, तुझसे बड़ा धार्मिक कौन होगा?" चुंगसिन समझ गया, आप भी समझ गए होंगे कि कर्त्तव्य का पालन ही जीवन में सर्वोपरि है, चाहे तो हम उसे मानव का परम धर्म कह सकते हैं।

हमारे युवा-पाठकों में प्रायः प्रत्येक किसी-न-किसी परीक्षा के लिए तैयारी का संकल्प किए हुए है। क्या आपमें प्रत्येक को विश्वास है कि वह पूरी निष्ठा के साथ परीक्षा या प्रतियोगिता के संदर्भ में अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहा/रही है? परीक्षा की तैयारी के अतिरिक्त आपके लिए अन्य कोई कार्यक्रम महत्त्व नहीं रखता है, कुछ ऐसे छात्र-छात्राएँ देखने में आते हैं, जो घर से पढ़ने के लिए कॉलेज आते हैं, परंतु वे कक्षाओं में न जाकर मटरगश्ती करते हैं अथवा कैंटीन में बैठकर दोस्तों के साथ बातें करते हैं। तब क्या वे अपने कर्त्तव्य की अवहेलना एवं माता-पिता के साथ विश्वासघात नहीं करते हैं? हम चाहते हैं कि हमारे युवा-पाठक शांतचित्त से विचार करके देखें कि वे उक्त श्रेणी के अनुत्तरदायी वर्ग के अंतर्गत तो नहीं आते हैं। परीक्षा एवं प्रतियोगिता में असफल होने के मूल में प्रायः हमारे युवा-वर्ग द्वारा पूरी तरह से अपने कर्त्तव्य का पालन न करना होता है, वे यदि अपने कर्त्तव्य का पालन पूरी निष्ठा के साथ करें तो हम पूरी दृढ़ता के साथ कह सकते हैं कि उनकी सफलता की संभावनाएँ कई गुना बढ़ जाएँगी। कर्त्तव्यपालन के संदर्भ में यह नहीं सोचना चाहिए कि यदि सफलता नहीं मिलती है तो क्या होगा? कर्त्तव्यपालन को लक्ष्य करके हमारे मन-मस्तिष्क में एक ही विचार रहना चाहिए कि मैं इसका सम्यक् निर्वाह एवं पालन किस प्रकार कर सकता हूँ।

1. **संत ताओ बू बीन कहाँ के रहने वाले थे–**
   (क) जापान के (ख) चीन के
   (ग) भूटान के (घ) दक्षिण कोरिया के।
2. **संत ताओ बू बीन के पास कौन पहुँचा–**
   (क) एक किसान (ख) एक व्यापारी
   (ग) चुंगसिन नामक व्यक्ति (घ) एक नेता।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–कर्त्तव्य का पालन ही जीवन में सर्वोपरि है।
   कारण (R)–कर्त्तव्य मानव का परमधर्म है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **'कुछ छात्र-छात्राएँ अपने कर्त्तव्य का पालन नहीं करते हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. वे कक्षाओं में न जाकर मटरगश्ती करते हैं।
2. कैंटीन में बैठकर दोस्तों के साथ बातें करते हैं।
3. प्रतियोगिताओं की तैयारी करते हैं।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. **कर्त्तव्यपालन के संदर्भ में क्या सोचना चाहिए–**

(क) इसका क्या लाभ होगा?
(ख) यदि सफलता न मिली तो क्या होगा?
(ग) इसका सम्यक् निर्वाह कैसे कर सकता हूँ?
(घ) उपर्युक्त सभी।

उत्तर— 1. (ख) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(27) भारत की विशेषता यह है कि वह समस्त संसार की लड़ाई लड़ रहा है। जबसे विज्ञान की बढ़ती हुई, प्रायः सभी देशों में अतीत और वर्तमान के बीच संघर्ष छिड़ गया और प्रायः सभी देशों में अतीत वर्तमान से हार गया। केवल भारत में वह आज भी ज़ोरों से युद्ध कर रहा है और संसार, जो भारत की ओर एक अस्पष्ट आशा से देख रहा है, उसका भी कारण भारत की अतीतप्रियता ही है। नए ज्ञान के प्रति भारत हमेशा ही उदार रहा है। नए धर्मों, नई संस्कृतियों और नई विचारधाराओं को अपनाकर भारत भी परिवर्तित होता रहा है; लेकिन विचित्रता की बात यह है कि भारत जितना ही बदलता है, उतना ही वह अपने आत्मस्वरूप के अधिक समीप पहुँच जाता है। यही विलक्षणता भारत का अपना गुण है और इसी गुण के कारण भारत से लोग यह आशा लगाए बैठे हैं कि आधुनिकता को अपना लेने के बाद भी भारत, भारत रहेगा और संसार के सामने एक नया नमूना पेश करेगा। सृष्टि-बोध की आधुनिक कल्पना उस कल्पना से भिन्न है, जो प्राचीन भारत में रही थी अथवा जो सारे प्राचीन विश्व में थी। आधुनिक कल्पना यह है कि सृष्टि अपने नियमों से आप चालित है और उन्हीं नियमों के परिणामस्वरूप धरती पर पेड़, पौधे, जीव और मनुष्य उत्पन्न हुए हैं। मनुष्य जब से उत्पन्न हुआ है, वह प्रकृति को अपने अनुकूल बनाने के लिए उससे संघर्ष कर रहा है। बाधाएँ तो उसके सामने बहुत आती हैं, मगर सफलता पाने में उसका आत्मविश्वास बढ़ता जाता है।

1. **गद्यांश के अनुसार भारत की विशेषता क्या है–**

(क) वह सब देशों से धनवान है
(ख) वह सब देशों से बलवान है
(ग) वह समस्त संसार की लड़ाई लड़ रहा है
(घ) वह सबसे कमज़ोर देश है।

2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–संसार भारत की ओर एक अस्पष्ट आशा से देख रहा है।

कारण (R)–भारत अपने अतीत से प्रेम करने वाला रहा है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **'भारत जितना बदलता है, उतना ही अपने आत्मस्वरूप के समीप पहुँचता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. यह विलक्षणता भारत का गुण है।
2. यह भारत का एक अवगुण है।
3. यह भारत की प्रकृति नहीं है।

(क) 1 सही है
(ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है
(घ) 1 और 2 सही हैं।

4. **अतीत और वर्तमान के बीच छिड़े संघर्ष का क्या कारण है–**

(क) धर्म का प्रचार
(ख) विज्ञान का ह्रास
(ग) विज्ञान की बढ़ोतरी
(घ) उपर्युक्त सभी।

5. **मनुष्य किस बात के लिए संघर्ष कर रहा है–**

(क) धन प्राप्ति के लिए
(ख) प्रकृति को अपने अनुकूल बनाने के लिए
(ग) प्रकृति को अपने वश में करने के लिए
(घ) विश्व-विजेता बनने के लिए।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(28) नया मनुष्य अपने भाग्य में नहीं, बाहुबल और बुद्धि में विश्वास करता है और वह यह मनसूबा रखता है कि वह अपनी योग्यता के अनुसार, ऊँची-से-ऊँची जगहों तक जा सकता है। नया आदमी यह भी नहीं मानता कि राजगद्दी मनुष्य ईश्वर की कृपा से प्राप्त करता है। यह समझता है कि देश में डिक्टेटर पैदा हो जाए तो उसका तख्ता वह उलट सकता है, समाज में शोषक बढ़ जाएँ तो उनकी नीवें वह हिला सकता है; क्योंकि यहाँ जो कुछ भी है, मनुष्य के साहस, श्रम और बुद्धि के अधीन है और अदृश्य का हस्तक्षेप कहीं नहीं है।

नए मनुष्य की सृष्टि-संबंधी जो कल्पना है, वह प्राचीन जगत् की कल्पना से भले ही भिन्न हो, किंतु जहाँ तक आदमी के कर्त्तव्य और सदाचार की बात है, प्राचीन जगत् की कल्पना उसमें कोई खलल नहीं डालती। प्राचीन जगत् की कल्पना मनुष्य के कर्त्तव्यभाव को कुंठित नहीं करती, उसके उल्लास को नहीं दबाती, न उसे यह सिखलाती है कि जो कुछ मिलने वाला है, वह तुम्हें ईश्वर से नहीं मिलेगा; अतएव तुम हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे रहो। जो लोग हाथ-पर-हाथ धरकर बैठे हुए हैं, उनसे पूछिए कि क्या वे ईश्वर के भरोसे बैठे हुए हैं? उत्तर मिलेगा, नहीं सिर्फ़ इसलिए कि हमारे पास साधन नहीं हैं, उद्यम की शक्ति नहीं है। अब उद्यम और साधन का नहीं होना, भाग्य के भरोसे बैठे रहने का परिणाम है अथवा किन्हीं अन्य कारणों का, इसका निर्णय आसानी से नहीं किया जा सकता। प्राचीन विश्व निरुद्यमी लोगों का विश्व नहीं था। अगर वह निरुद्यमियों और भाग्यवादियों का संसार हुआ होता तो जिन लोगों ने उस समय बड़े-बड़े काम किए, उनका आविर्भाव ही नहीं होता। भाग्य के विरुद्ध पुरुषार्थ की महिमा आदमी को कोई आज ही ज्ञात नहीं हुई है।

1. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–नया मनुष्य भाग्य में नहीं, बुद्धि और बाहुबल में विश्वास रखता है।

कारण (R)–वह अपनी योग्यता से ऊँची-से-ऊँची जगह पहुँचने की इच्छा रखता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

2. **'प्राचीन जगत की कल्पना मनुष्य के कर्त्तव्यभाव को कुंठित नहीं करती।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
 1. वह मनुष्य के उल्लास को नहीं दबाती।
 2. मनुष्य को हाथ-पर-हाथ धरकर बैठने के लिए प्रेरित नहीं करती।
 3. मनुष्य को पुरुषार्थी नहीं बनाती।

 (क) 1 सही है (ख) 2 सही है
 (ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।
3. **लोग हाथ-पर-हाथ धरे बैठने का क्या कारण बताते हैं–**
 (क) काम करने की इच्छा न होना
 (ख) ईश्वर पर भरोसा होना
 (ग) साधन और उद्यम शक्ति का अभाव होना
 (घ) उपर्युक्त सभी।
4. **प्राचीन विश्व किन लोगों का विश्व नहीं था–**
 (क) धार्मिक लोगों का (ख) उद्यमी लोगों का
 (ग) निरुद्यमी लोगों का (घ) आस्तिक लोगों का।
5. **'मनसूबा' शब्द है–**
 (क) तत्सम (ख) तद्भव
 (ग) देशज (घ) विदेशी।

उत्तर— 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(29) मान लीजिए सब सुख-ही-सुख होता, दुःख का कोई नाम तक न जानता होता तो इस संसार की क्या दशा होती। मैं समझता हूँ, तब यह दृश्य जगत् संसार इस नाम से कभी न कहा जाता; क्योंकि संसार तो उसे ही कहा जा सकता है, जो सदा एकरूप न रहे। 'संसार सम् उपसर्गपूर्वक सृ धातु से बना है, जिसके माने चलने के हैं।' जब सुख के सब कारण एक जगह आकर जड़वत् हो गए तो फिर इसमें रह ही क्या गया, बल्कि तब तो यह संसार उससे अधिक फीका होगा, जितना दुःखी को दुःख की दशा में बोध होता है। दूसरे दुःख ही मनुष्य को उभारने वाला है और अपने में उभारने की इच्छा ही से मनुष्य दुःख उठाकर भी उससे परे होने की अभिलाषा रखता है। दुःख को बरकाना या उसे कम करने का ही नाम भाँति-भाँति की तरक्की और उन्नति है। बड़े-बड़े सभ्य देश और जाति, जो आज उन्नति के शिखर पर हैं, पहले अत्यंत क्लेश और दुःख झेलकर उन्नति की इस चरमसीमा तक पहुँचे हैं। बिना क्लेश उठा सुख और ख्याति तो कभी मिलती ही नहीं, इसलिए सुख का हेतु भी हम दुःख ही मानेंगे। यदि सिंह आदि शिकारी जानवरों को अधिक भूख न होती और साधारण पशुओं के समान केवल घास-पात से पेट भरकर वे भी संतुष्ट रहते तो क्या वे इतने मज़बूत होते और यदि हिरन-खरगोश आदि जीवों को सिंह आदि शिकारी जानवरों से भय न रहता तो वे क्या इतने तेज़ वेगगामी होते। यदि भूख का दुःख न होता तो अमृत-समान भाँति-भाँति के सुस्वादु भोजन का सुख हम क्या जानते।

1. **संसार किसे कहा जाता है–**
 (क) जो दिखाई दे (ख) जो दिखाई न दे
 (ग) जो एकरूप रहे (घ) जो सदा एकरूप न रहे।
2. **'सम्' उपसर्गपूर्वक 'सृ' धातु से बने 'संसार' शब्द का क्या अर्थ है–**
 (क) चलना (ख) टूटना
 (ग) नष्ट होना (घ) बनना।
3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
 कथन (A)–कष्ट उठाए बिना सुख और ख्याति नहीं मिलती।
 कारण (R)–सुख का हेतु भी दुख को माना जाता है।
 (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
 (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
 (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
 (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
4. **'यदि सुख-दुख न होते तो संसार का नाम 'संसार' न होता।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
 1. संसार वह है, जो एकरूप न रहे।
 2. संसार चलने का नाम है।
 3. संसार अपरिवर्तित रहता है।

 (क) 1 सही है (ख) 2 सही है
 (ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।
5. **हिरन-खरगोश आदि तीव्र वेगगामी क्यों होते हैं–**
 (क) वे शक्तिशाली होते हैं
 (ख) वे घास-पात खाते हैं
 (ग) वे दौड़ना जानते हैं
 (घ) उन्हें सिंह आदि शिकारी जानवरों का भय होता है।

उत्तर— 1. (घ) **2.** (क) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(30) आधा अधूरा ज्ञानी अपनी विद्वत्ता का अधिक प्रदर्शन करता है। व्यावसायिक जगत् में प्रायः ऐसे विद्वानों के उदाहरण मिलते हैं, जिनमें ज्ञान, सामर्थ्य, धन, शक्ति आदि का अभाव होता है, परंतु उनमें दिखावे और अहंकार की भावना अधिक होती है। ऐसी विशेषताओं वाले व्यक्ति अपने को ऊँचा और महान दिखाने के लिए ज़ोर-शोर से अपने गुणों का प्रचार करते रहते हैं, परंतु जब कुछ कर दिखाने का समय आता है, तो सबसे पीछे खड़े होते हैं। ऐसे व्यक्ति समाज में अपनी छवि उस 'थोथे चने' की भाँति बना लेते हैं, जो घना बजता ही रहता है। अधूरा ज्ञानी अपनी हीनता का भाव छिपाने के लिए बार-बार ज्ञान का दंभ भरता है और समाज में उपहास का पात्र बनता है, जबकि जो पूर्णरूप से ज्ञानी और सामर्थ्यवान् है, वह नम्र और संतुलित व्यवहार करता है। उसके व्यवहार से कहीं भी अहंकार का भाव नहीं छलकता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि फल से युक्त वृक्षों की डालियाँ झुकी ही रहती हैं।

1. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
 कथन (A)–आधा अधूरा ज्ञानी अपनी विद्वत्ता का अधिक प्रदर्शन करता है।
 कारण (R)–उसमें दिखावे और अहंकार की भावना नहीं होती।
 (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
 (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
 (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
 (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
2. **'पूर्ण ज्ञानी नम्र और संतुलित व्यवहार करता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
 1. उसके व्यवहार में अहंकार नहीं होता।
 2. फल से युक्त वृक्षों की डालियाँ झुकी रहती हैं।
 3. थोथा चना अधिक बजता है।

 (क) 1 सही है (ख) 2 सही है
 (ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।
3. **अज्ञानी कब सबसे पीछे खड़े होते हैं–**
 (क) जब उन्हें पुकारा जाता है
 (ख) जब उन्हें डर लगता है
 (ग) जब कुछ कर दिखाने का समय आता है
 (घ) जब उन्हें लज्जा आती है।

4. **हीनता का भाव छिपाने के लिए अज्ञानी क्या करता है–**

(क) अधिक बोलता है

(ख) बिलकुल चुप रहता है

(ग) बार-बार ज्ञान का दंभ भरता है

(घ) दूसरों पर दोषारोपण करता है।

5. **पूर्णज्ञानी कैसा व्यवहार करता है–**

(क) अशिष्टता पूर्ण (ख) नम्र और संतुलित

(ग) आडंबरयुक्त (घ) कठोर और शुष्क।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(31) उस्ताद बिस्मिल्ला खाँ से जब पूछा गया कि आपकी शहनाई में बनारस कितना मौजूद है? उनका जवाब था, "हमने कुछ नहीं पैदा किया है। जो हो गया, वह उसका करम है। हाँ, जो लेकर हम चले हैं, अपनी शहनाई में वह बनारस का अंग है। किसी भी चीज़ में जल्दबाज़ी नहीं करते बनारसवाले। बड़े इत्मीनान से बोल लेकर चलते हैं। एक महाराज जी थे, वे बाला जी घाट के पास मंदिर में रोज़ सुबह की आरती में करीब साढ़े चार-पाँच बजे बड़ा सुंदर पद गाते थे-'किरपा करो महाराज मो पे।' हम रियाज़ के लिए जाएँ वहाँ तो रोज़ सुनते थे। फिर ठीक वही बंदिश, जब वह गाकर बंद करें, तब हम अपनी शहनाई से निकालते थे तो वही ठेठपन आया हमारे बजाने में। मंदिर का घंटा-घड़ियाल भी कानों में पड़ता था और गंगा-पुजैया का विवाह, सेहरा भी गज़ब जान पड़ता था। हम आज भी जितना कर पाते हैं, वो सब यही बनारस की देन है........ सबकी अपनी-अपनी खूबी और चलन-बद्दत का अलग-अलग अंदाज़ होता है, अब जब हम ज़िंदगीभर यहीं मंगला-गौरी और पक्का महल में रियाज़ करते जवान हुए हों तो कहीं-न-कहीं से बनारस का शहद तो टपकेगा ही हमारी शहनाई में।"

1. **बिस्मिल्ला खाँ कौन थे–**

(क) प्रसिद्ध गायक (ख) तबलावादक

(ग) शहनाईवादक (घ) सितारवादक।

2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–बनारस वाले किसी चीज़ में जल्दबाजी नहीं करते।

कारण (R)–वे बड़े इत्मीनान से बोल लेकर चलते हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **'बिस्मिल्ला खाँ मंदिर के महाराज जी की बंदिश सुनते थे।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. इससे उनके शहनाई-वादन में ठेठपन आ गया।

2. शहनाई-वादन में मधुरता आ गई।

3. शहनाई-वादन में रूखापन आ गया।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही हैं

(ग) 3 सही है (घ) 1 और 3 सही हैं।

4. **बिस्मिल्ला खाँ की शहनाई में बनारस कितना मौजूद है–**

(क) पूर्णरूप से (ख) थोड़ा-सा

(ग) बिलकुल भी नहीं (घ) आधा।

5. **'पक्का महल' में 'पक्का' शब्द क्या है–**

(क) संज्ञा (ख) सर्वनाम

(ग) विशेषण (घ) उपसर्ग।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (ग)।

(32) काशी के सेठ गंगादास एक दिन गंगा में स्नान कर रहे थे कि तभी एक व्यक्ति नदी में कूदा और डुबकियाँ खाने लगा। सेठ जी तेज़ी से तैरते हुए उसके पास पहुँचे और किसी तरह खींचकर उसे किनारे ले आए। वह उनका मुनीम नंदलाल था। उन्होंने पूछा, "आपको किसने गंगा में फेंका?" नंदलाल बोला, "किसी ने नहीं, मैं तो आत्महत्या करना चाहता था।" सेठ जी ने इसका कारण पूछा तो उसने कहा, "मैंने आपके पाँच हज़ार रुपये चुराकर सट्टे में लगाए और हार गया। मैंने सोचा कि आप मुझे जेल भिजवा देंगे। इसलिए बदनामी के डर से मैंने मर जाना ही ठीक समझा।" कुछ देर तक सोचने के बाद सेठ जी ने कहा, "तुम्हारा अपराध माफ़ किया जा सकता है, लेकिन एक शर्त है कि आज से कभी किसी प्रकार का सट्टा नहीं लगाओगे।" नंदलाल ने वचन दिया कि वह अब ऐसे काम नहीं करेगा। सेठ ने कहा, "जाओ माफ़ किया। पाँच हज़ार रुपये मेरे नाम घरेलू ख़र्च में डाल देना।" सेठ ने कहा, "तुम चोर नहीं हो। तुमने एक भूल की है, चोरी नहीं। जो आदमी अपनी एक भूल के लिए मरने तक की बात सोच ले, वह कभी चोर नहीं हो सकता।"

1. **गंगा में कूदने वाला व्यक्ति कौन था–**

(क) एक किसान (ख) एक महात्मा

(ग) मुनीम नंदलाल (घ) एक पुजारी।

2. **मुनीम गंगा में क्यों कूदा–**

(क) नहाने के लिए (ख) गरमी दूर करने के लिए

(ग) पाप धोने के लिए (घ) आत्महत्या करने के लिए।

3. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–मुनीम आत्महत्या करना चाहता था।

कारण (R)–वह गरीबी से दुखी था।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **'सेठ के अनुसार मुनीम चोर नहीं है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**

1. उसने चोरी नहीं की है।

2. उसने एक भूल की है।

3. वह झूठ बोला है।

(क) 1 सही है (ख) 2 सही हैं

(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. **सेठ ने मुनीम को किस शर्त पर माफ़ किया–**

(क) कभी झूठ न बोलने की (ख) कभी सट्टा न लगाने की

(ग) कभी चोरी न करने की (घ) कभी गंगा में न नहाने की

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(33) माँ का एक बार का प्रोत्साहन पुत्र के लिए जैसा उपकारी और उसके चित्त में असर पैदा करने वाला होता है, वैसा पिता की सौ बार की नसीहत और ताड़ना भी नहीं होती। सौतेली माँ सुरुचि के वज्रपात सदृश वाक्-प्रहार से ताड़ित और पिता की अवज्ञा और निरादर से अत्यंत संतापित ध्रुव को, जब वह केवल पाँच ही वर्ष के बालक थे, सुनीति देवी का एक बार का प्रोत्साहन उनके लिए ध्रुवपद की प्राप्ति का हेतु हुआ, जिसके समान उच्च और स्थिर पद आज तक किसी को मिला ही नहीं। पिता का स्नेह बदला चुकाने की इच्छा से होता है। वह पुत्र को इसीलिए पालता-पोसता और पढ़ाता-लिखाता है कि बुढ़ापे में वह हमारे काम आएगा तथा जब हम सब भाँति अपाहिज और अपंग हो जाएँगे तो हमारी सेवा करेगा और हमारे अन्न-वस्त्र की फ़िक्र रखेगा,

पर माँ का उदार और अकृत्रिम प्रेम इन सब बातों की कभी इच्छा नहीं रखता। माँ अपनी प्रिय संतान के लिए कितना कष्ट सहती है, जिसे यादकर चित्त में वात्सल्यभाव का उद्गार हो आता है। माँ में पिता के सभान प्रत्युपकार की वासना भी नहीं है, दया मानो देह धरे सामने आकर खड़ी हो जाती है। टूटी फूस की मढ़ी में, जबकि मूसलाधार अखंड पानी बरस रहा है और फूस का ठाठ सब ओर से ऐसा टपकता है कि कहीं बीता-भर जगह बची नहीं है, न गरीबी के कारण इतना कपड़ा-लत्ता पास है कि आप भी ओढ़े और प्रिय संतान को ढाँपकर वृष्टि के भयंकर उत्पात से बचाए, माता आधी धोती ओढ़े, आधी से अपने दुधमुँहे बालक को ढाँपे उसको छाती से लगाए हुए है। अपने प्राण और देह की उसे तनिक भी चिंता नहीं है, किंतु वात और वृष्टि से पुत्र को कोई अनिष्ट न हो, इसलिए वह अत्यंत व्यग्र हो रही है। पुत्र की रोगी और अस्वस्थ दशा में पलंग के पास बैठी उदासीन मन मारे वह उसका मुँह ताक रही है। रात की नींद और दिन का भोजन उसे मुहाल हो गया है। भाँति-भाँति की मान-मनौती तथा उतारा और सदके में वह लगी है। जो जौन कहता है, वह सबकुछ करती जाती है। अपनी जान तक चाहे चली जाए, पर पुत्र को स्वस्थता हो, इसी की फ़िक्र में वह है।

1. बालक पर किसका प्रभाव अधिक पड़ता है–
(क) माता का (ख) पिता का
(ग) गुरु का (घ) मित्र का।

2. किसका प्रोत्साहन बालक ध्रुव के लिए ध्रुवपद की प्राप्ति का हेतु बना–
(क) पिता का (ख) माता सुनीति का
(ग) सौतेली माता सुरुचि का (घ) अपने गुरु का।

3. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A)–पिता का स्नेह बदला चुकाने की इच्छा से होता है।
कारण (R)–वह पुत्र को बुढ़ापे के सहारे के लिए पालता-पोसता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. 'माँ का प्रेम उदार और अकृत्रिम होता है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–
1. माँ संतान के लिए कष्ट सहन करती है।
2. माँ में पिता के समान प्रत्युपकार की वासना नहीं होती।
3. वह संतान से केवल स्नेह चाहती है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

5. माँ की व्यग्रता का कारण क्या होता है–
(क) पुत्र का अनिष्ट न हो (ख) पुत्र का कल्याण हो
(ग) पुत्र सुखी रहे (घ) पुत्र दीर्घायु हो।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (क)।

(34) नौका विजय-गर्व से नदी की लहरों पर दौड़ती चली जाती है और पानी उसकी 'जय-जयकार' करता हुआ उसे अपने हाथों पर उठाए रहता है, किंतु जब वह डूबती है तो अपने ही छोटे-से छेद के कारण, जो धीरे-धीरे कब हो गया, वह भी अपनी लापरवाही से नहीं जान पाती। वह उसी छेद के कारण डूबती है, जिसे उसने मामूली-सी बात समझकर टाल दिया था। हर विपत्ति हम पर तभी हावी होती है, जब हम थोड़े-से ढीले पड़ जाते हैं। यदि हम प्रतिदिन सजग होकर इस बात पर दृष्टि दौड़ाते रहें कि हमारे प्रयत्नों और उद्योगों में कहीं कोई कमी तो नहीं रह गई, कहीं कोई छेद तो नहीं रह गया तो हमें कोई पराजित नहीं कर सकता। अपने कल को कायर और निकम्मे लोग ही याद करके पछताते रहते हैं। जहाँ हम कल खड़े थे, वहीं खड़े रहना अपराध है; जो कुछ और जिस रूप में हमने कोई काम कल किया था, उससे कहीं बेहतर करने का संकल्प और प्रयत्न करना हमारा धर्म होना चाहिए। इन प्रयत्नों को करते समय हमें साधनों के अभाव का रोना नहीं रोना चाहिए और न ही अपने भाग्य के भरोसे बैठा रहना चाहिए कि यदि भाग्य में होगा तो मिल जाएगा। साधनों और भाग्य का रोना कायर और अकर्मण्य लोग रोते हैं। पुरुषार्थी तो अपने पुरुषार्थ से असंभव को भी संभव बना देते हैं।

1. पानी कब नौका की जय-जयकार करता है–
(क) जब वह लहरों से टकराती है
(ख) जब वह डूबने लगती है
(ग) जब वह विजय-गर्व से लहरों पर दौड़ती है
(घ) जब वह लोगों को पार उतारती है।

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A)–नौका अपने छोटे-से छेद के कारण डूबती है।
कारण (R)–छेद को उसने मामूली-सी बात समझकर टाल दिया था।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. 'प्रयत्न करते समय साधनों के अभाव और भाग्य का रोना नहीं रोना चाहिए।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–
1. साधनों का रोना कायर और अकर्मण्य रोते हैं।
2. साधनों के बिना परिश्रम व्यर्थ है।
3. सफलता में भाग्य का बड़ा हाथ होता है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

4. लेखक के अनुसार अपराध क्या है–
(क) कल को भूल जाना
(ख) आज को भूल जाना
(ग) समय का सदुपयोग करना
(घ) जहाँ कल खड़े थे, वहीं खड़े रहना।

5. साधनों और भाग्य का रोना कौन रोते हैं–
(क) पुरुषार्थी लोग (ख) धनहीन लोग
(ग) कायर और अकर्मण्य लोग (घ) धनवान लोग।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(35) धनवान या विद्वान को जो प्रतिष्ठा दी जाती है या सर्वसाधारण में जो यश या नामवरी उसकी होती है, उसकी स्पर्धा सबको होती है। कौन ऐसा होगा, जो अपने वैभव, अपनी विद्या या योग्यता से औरों को अपने नीचे रखने की इच्छा न करता हो? शक्ति का एकमात्र आधार केवल चारुचरित्र वाले में अलबत्ता यह नहीं देखा जाता। वह यह कभी नहीं चाहता कि चरित्र के पैमाने में अर्थात् चरित्र क्या है, इसकी नाप-जोख में दूसरा हमारे आगे न बढ़ने पाए।
कार्य कारण का बड़ा घनिष्ठ संबंध है। इस सूत्र के अनुसार, देश या जाति का एक-एक व्यक्ति संपूर्ण देश या जाति की सभ्यता रूप कार्य का कारण है, अर्थात् जिस देश या जाति में एक-एक मनुष्य अलग-अलग अपने चरित्र के सुधार में लगे रहते हैं, वह समग्र देश उन्नति की

अंतिम सीमा तक पहुँच सभ्यता का एक बहुत अच्छा नमूना बन जाता है। नीचे-से-नीचे कुल में पैदा हुआ हो, बहुत पढ़ा-लिखा भी न हो, बड़ा सुबीते वाला भी न हो, न किसी तरह की कोई असाधारण बात उसमें हो, किंतु चरित्र की कसौटी में यदि यह अच्छी तरह कस लिया गया है तो उस आदरणीय मनुष्य का संभ्रम और आदर समाज में कौन ऐसा कम्बख्त होगा, जो न करेगा और ईर्ष्यावश उसके महत्त्व को मुक्तकंठ हो स्वीकार न करेगा। नीचे दरज़े से ऊँचे को पहुँचने के लिए चरित्र की कसौटी से बढ़कर और कोई दूसरा ज़रिया नहीं है। चरित्रवान् यद्यपि धीरे-धीरे बहुत देर से ऊपर को उठता है, पर यह निश्चित है कि चरित्रपालन में जो सावधान है, वह एक-न-एक दिन अवश्य समाज का अगुआ मान लिया जाएगा। हमारे यहाँ के गोत्र-प्रवर्तक ऋषि, भिन्न-भिन्न मत या संप्रदायों के चलाने वाले आचार्य, नबी, औलिया आदि सब इसी क्रम पर आरूढ़ रह लाखों-करोड़ों मनुष्यों के गुरु देववत् माननीय पूजनीय हुए: वरन् कितने उनमें से ईश्वर के अंश और अवतार माने गए।

1. **लोग दूसरों को किसके द्वारा अपने से नीचे रखने की इच्छा करते हैं–**
   (क) अपने वैभव से (ख) अपनी विद्या से
   (ग) अपनी योग्यता से (घ) ये सभी।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–यश और मान की स्पर्द्धा सबको होती है।
   कारण (R)–लोग दूसरों को अपने से नीचे रखना चाहते हैं।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
3. **'कार्य-कारण का बड़ा घनिष्ठ संबंध है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   1. देश की सभ्यता कार्य है तो व्यक्ति कारण है।
   2. चरित्रवान् का महत्त्व संपूर्ण समाज स्वीकारता है।
   3. देश की उन्नति कार्य है तो व्यक्ति का उच्च चरित्र कारण है।
   (क) 1 सही है (ख) 2 सही है
   (ग) 3 सही है (घ) 1 और 3 सही हैं।
4. **एक-न-एक दिन किसे समाज का अगुआ मान लिया जाता है–**
   (क) जो ज्ञानार्जन में लगा है
   (ख) जो धनार्जन में लगा है
   (ग) जो चरित्रपालन में सावधान है
   (घ) उपर्युक्त में से कोई नहीं।
5. **'यद्यपि' में कौन-सी संधि है–**
   (क) दीर्घ संधि (ख) गुण संधि
   (ग) यण् संधि (घ) वृद्धि संधि।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (ग)।

(36) मनुष्य के शरीर में आँसू भी गड़े हुए खज़ाने के माफ़िक हैं। जैसे भी कोई नाज़ुक वक़्त आ पड़ने पर संचित पूँजी ही काम देती है, उसी तरह हर्ष, शोक, भय, प्रेम इत्यादि भावों को प्रकट करने में जब सब इंद्रियाँ स्थगित होकर हार मान बैठती हैं, तब आँसू ही उन-उन भावों को प्रकट करने में सहायक होते हैं। चिरकाल के वियोग के उपरांत जब किसी दिली-दोस्त से मुलाकात होती है तो उस समय हर्ष और प्रमोद के उफ़ान में अंग-अंग ढीले पड़ जाते हैं, वाष्प गद्‌गद कंठ रुँध जाता है, जिह्वा इतनी शिथिल पड़ जाती है कि उससे मिलने की खुशी को प्रकट करने के लिए एक-एक शब्द मानो बोझ-सा मालूम पड़ता है। पहले इसके कि शब्दों से वह अपना असीम आनंद प्रकट करे, सहसा आँसू की नदी उसकी आँख में उमड़ आती है और नेत्र के पवित्र जल से वह अपने प्राण-प्रिय को नहलाता हुआ, उसे बगलगीर करने को हाथ फैलाता है। सच्चे भक्त और उपासक की कसौटी भी इसी से हो सकती है। अपने उपास्यदेव के नाम-संकीर्तन में जिसे अश्रुपात न हुआ, मूर्ति का दर्शन कर प्रेमाश्रुपात से जिसने उसके चरण-कमलों का अभिषेक न किया, उस दांभिक को भक्ति के आभासमात्र से क्या फल? सरस कोमल चित्त वाले अपने मनोगत सुख-दुःख के भावों को छिपाने की हज़ार-हज़ार चेष्टा करते हैं कि दूसरा कोई उनके चित्त की गहराई को न थहा सके, पर अश्रुपात भाव-गोपन की सब चेष्टा को व्यर्थ कर देता है। मोती-सी आँसू की बूँदें जिस समय सहसा नेत्र से झरने लगती हैं, उस समय उसे रोक लेना बड़े-बड़े गंभीर प्रकृति वालों की भी शक्ति के बाहर होता है।

1. **मनुष्य के शरीर में आँसू किसके समान हैं–**
   (क) रक्त के समान (ख) जल के समान
   (ग) गड़े हुए खज़ाने के समान (घ) वाणी के समान।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–मनुष्य के शरीर में आँसू गड़े हुए खज़ाने के समान हैं।
   कारण (R)–सहसा आँसू की नदी आँखों से उमड़ आती है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
3. **'चिरकाल के वियोग के उपरांत दिली-दोस्त से मुलाकात होती है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   1. हर्ष के उफान से अंग-अंग ढीले पड़ जाते हैं।
   2. वाष्प गद्‌गद् कंठ रुँध जाता है।
   3. अच्छे-अच्छे व्यंजन बनाए जाते हैं।
   (क) 1 सही है (ख) 2 सही है
   (ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।
4. **सच्चे भक्त और उपासक की कसौटी क्या है–**
   (क) उपास्यदेव का नाम-संकीर्तन
   (ख) मधुर स्वर से भजन-गायन
   (ग) अच्छी पूजा सामग्री
   (घ) उपास्यदेव के प्रेम में अश्रुपात।
5. **भाव-गोपन की सारी चेष्टा को कौन व्यर्थ कर देता है–**
   (क) भाषण (ख) गायन
   (ग) अश्रुपात (घ) नृत्य।

उत्तर— **1.** (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(37) जब जाति प्रथम-ही-प्रथम बनी थी, जब उसके सब नियम ठीक-ठीक थे। जो लोग उन नियमों को भंग करते थे, वह पतित समझे जाते थे और बिरादरी के बाहर कर दिए जाते थे। खाना-पीना आदि यथावत् व्यवहार उनके साथ रोक दिया जाता था। इस भय से कोई उन नियमों के उल्लंघन का साहस नहीं करता था, परंतु अब इस नई रोशनी के ज़माने में सब बात अस्त-व्यस्त-सी हो गई और होती जाती हैं। कहीं विद्या या धन के मद में उन्मत्त हो, कहीं सर्वजित काम और लोभ के चेष्टित के वशीभूत हो, कहीं मूर्खता महारानी के पुजारी बन नियमों की कुछ परवाह नहीं करते: जिसका परिणाम यह हुआ कि कोई बिरादरी अब शुद्ध न रह गई। झूठा कुलाभिमान लोगों की नस-नस में भरा

हुआ है। इसका एक मुख्य कारण हमारे मन में यह भी खटक रहा है कि प्रायः जाति-पाँति और बिरादराने के मामलों में खूसट-दिमाग वाले बाबा आदम के परदादा बुड्ढों ही की प्रधानता रहती है, जो कट्टर कनसरवेटिव होते हैं अर्थात् परिवर्तन विमुखता जिनको जन्मघूटी के साथ पिला दी जाती है, संशोधन या परिवर्तन के जो महाबैरी हैं। अब इस जाति-पाँति के नियमों में परिवर्तन आवश्यक है। बिना जिसके यह सब निरा ढकोसला हो रहा है, जो कुछ समाज को इससे यत् किंचित् लाभ भी पहुँच रहा है, सब छार में मिलता जाता है। जैसा बेहूदा तरीका बिरादरी का इस समय प्रचलित है, उससे कभी आशा नहीं की जा सकती कि जाति-पाँति के सत्यानाश बिना हुए उन्नति की हज़ार-हज़ार चेष्टा करने पर भी हमारी या हमारे देश की कभी तरक्की होगी।

1. जब जाति सर्वप्रथम बनी, तब उसके नियम कैसे थे–

(क) बहुत सरल
(ख) बहुत कठोर
(ग) बहुत गलत
(घ) ठीक-ठीक।

2. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A)–प्रारंभ में जाति के सब नियम ठीक-ठीक थे।
कारण (R)–जाति-नियम तोड़ने वालों को पतित समझा जाता था।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. 'अब लोग जाति के नियमों की परवाह नहीं करते।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–

1. कुछ विद्या और धन के मद में उन्मत्त होकर नियम तोड़ते हैं।
2. कुछ काम, लोभ और मूर्खतावश जातीय नियम तोड़ते हैं।
3. अब जातीय नियम सरल हो गए हैं।

(क) 1 सही है
(ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है
(घ) 1 और 2 सही हैं।

4. किसके बिना जाति-व्यवस्था निरा ढकोसला हो गई है–

(क) कठोर नियमों के बिना
(ख) नियमों में परिवर्तन के बिना
(ग) नियमों में आस्था के बिना
(घ) नियम तोड़ने वालों को दंड दिए बिना।

5. जाति के नियमों में संशोधन या परिवर्तन के महाबैरी कौन हैं–

(क) नए जमाने के युवा
(ख) अशिक्षित लोग
(ग) खूसट-दिमाग वाले परदादा बुड्ढे
(घ) आजकल के राजनेता।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(38) ईश्वर के अनुग्रह से अब इस समय हिंदी साहित्यसेवी बहुत हो गए हैं और दिनों-दिन उनकी संख्या बढ़ती जाती है। हमारे प्रांत के प्रत्येक नगर के सिवाय कलकत्ता, बांबे और पंजाब, जो प्रत्यक्ष में हिंदी बोलनेवाले प्रांत नहीं हैं, वहाँ भी भाषा के सुलेखकों की संख्या बढ़ती जा रही है और हिंदी भी अपनी और बहनों–बंगला, गुजराती, मराठी के समान साहित्य-भंडार का आगार होती जाती है। प्रतिवर्ष कितने ही मासिक और साप्ताहिक पत्र नए निकलते हैं, किंतु एक समय वह भी था, जब उर्दू के सिवाय देश में हिंदी का नाम भी न था। दाहिनी ओर से हिंदी को लिखते देखकर लोगों को अचरज होता था कि क्या कोई ऐसी भी लिखावट है, जो बाएँ हाथ की ओर से नहीं लिखी जाती। वर्तमान हिंदी साहित्य के जन्मदाता प्रातः स्मरणीय सुगृहीत नामधेय बाबू हरिश्चंद्र तथा दो-एक उन्हीं के समकक्षों को छोड़कर सुलेखकों का सर्वथा अभाव था। भाषा साहित्य-भास्कर पंडित प्रताप का उदय भी अब तक नहीं हुआ था। श्री राधाचरण चंचरीक साहित्य-मंजरी का मधुपान करते किसी कुसुमावली में छिपे पड़े थे। मधुप की प्रौढ़ दशा तक नहीं पहुँच थे। तात्पर्य यह है कि हिंदी-साहित्य का आकाश उस समय तक सब ओर से धुँधला था। उर्दू इतना आक्रमण किए थी कि हिंदी को प्रकाश के लिए कहीं अवकाश ही न था।

1. कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–
कथन (A)–इस समय हिंदी साहित्यसेवियों की संख्या प्रतिदिन बढ़ रही है।
कारण (R)–अहिंदी भाषी राज्यों में भी भाषा सुलेखकों में वृद्धि हुई है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. 'एक समय देश में उर्दू के अलावा हिंदी का नाम भी न था।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–

1. दाहिनी ओर से हिंदी को लिखते देखकर लोगों को अचरज होता था।
2. हिंदी साहित्यकारों का अभाव था।
3. लोगों को हिंदी भाषा अच्छी नहीं लगती थी।

(क) 1 सही है
(ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है
(घ) 1 और 2 सही हैं।

3. लेखक ने किसे वर्तमान हिंदी-साहित्य का जन्मदाता कहा है–

(क) प्रेमचंद को
(ख) बाबू हरिश्चंद्र को
(ग) प्रतापनारायण मिश्र को
(घ) आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी को।

4. किस भाषा के आक्रमण के कारण हिंदी को प्रकाश के लिए अवकाश नहीं था–

(क) उर्दू के (ख) अंग्रेज़ी के
(ग) तमिल के (घ) कन्नड़ के।

5. 'साहित्यसेवी' में समास है–

(क) अव्ययीभाव
(ख) तत्पुरुष
(ग) कर्मधारय
(घ) द्विगु।

उत्तर— **1.** (घ) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (ख)।

अपठित काव्यांश

निर्देश–निम्नलिखित काव्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के उत्तर सही उत्तर विकल्प चुनकर लिखिए–

(1) तुम भारत, हम भारतीय हैं, तुम माता, हम बेटे
किसकी हिम्मत है कि तुमको दुष्टता-दृष्टि से देखे?
ओ माता! तुम एक अरब से अधिक भुजाओं वाली,
सबकी रक्षा में तुम सक्षम, हो अदम्य बलशाली।
भाषा, वेश, प्रदेश भिन्न हैं, फिर भी भाई-भाई,
भारत की साँझी संस्कृति में पलते भारतवासी।
सुदिनों में हम एक साथ हँसते, गाते, सोते हैं,
दुर्दिन में भी साथ-साथ जगते पौरुष ढोते हैं।
तुम हो शस्यश्यामला, खेतों में तुम लहराती हो,
प्रकृति प्राणमयि, सामगानमयि, तुम न किसे भाती हो?
तुम न अगर होती तो धरती वसुधा क्यों कहलाती?
गंगा कहाँ बहा करती, गीता क्यों गाई जाती?

1. कवि ने भारतभूमि को क्या कहकर संबोधित किया है–
(क) माता (ख) बलशालिनी
(ग) गीता (घ) वसुधा।

2. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–
कथन (A)–भारत माता एक अरब से अधिक भुजाओं वाली है।
कारण (R)–वह सबकी रक्षा में सक्षम और अदम्य बलशाली है।
(क) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

3. भारत माता का बल कैसा है–
(क) सीमित (ख) असीमित
(ग) अदम्य (घ) अतुलनीय।

4. भारतवासी किस प्रकार की संस्कृति में पलते हैं–
(क) साँझी (ख) भिन्न
(ग) नवीन (घ) प्राचीन।

5. साथ-साथ हँसने-गाने और सोने का कार्य हम सब कब करते हैं–
(क) रात में (ख) दोपहर में
(ग) दुर्दिनों में (घ) सुदिनों में।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ग) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (घ)।

(2) सावधान, जन-नायक सावधान!
यह स्तुति का साँप तुम्हें डस न ले।
बचो इन बढ़ी हुई बाँहों से
धृतराष्ट्र-मोहपाश
कहीं तुम्हें कस न ले।
सुनते हैं कभी, किसी युग में
पाते ही राम का चरण-स्पर्श
शिला प्राणवती हुई, देखते हो किंतु आज–
अपने उपास्य के चरणों को छू-छूकर
भक्त उन्हें पत्थर की मूर्ति बना देते हैं।
सावधान, भक्तों की टोली आ रही है–
पूजा-द्रव्य लिए।
बचो अर्चना से, फूलमाला से,
अंधी अनुशंसा की हाला से,
बचो वंदना की वंचना से, आत्मरति से,
बचो आत्मपोषण से, आत्मा की क्षति से।

1. कवि ने झूठी प्रशंसा की तुलना किससे की है–
(क) साँप से (ख) बिच्छू से
(ग) मोर से (घ) ज़हर से।

2. कविता में कवि ने किसे सावधान किया है–
(क) सैनिक को (ख) जन-नायक को
(ग) प्रहरी को (घ) पुजारी को।

3. राम का चरण-स्पर्श पाते ही शिला कैसी हो गई थी–
(क) स्वर्णमयी (ख) रजतमयी
(ग) प्राणवती (घ) सौंदर्यवती।

4. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–
कथन (A)–किसी युग में राम का चरण-स्पर्श पाते ही शिला प्राणवती हो गई थी।
कारण (R)–भक्त अपने उपास्य के चरण छूकर उसे पत्थर की मूर्ति बना देते हैं।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

5. अनुशंसा की तुलना किससे की है–
(क) वंदना से (ख) वंचना से
(ग) हाला से (घ) माला से।

उत्तर— **1.** (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ग)।

(3) अभी समय है, अभी नहीं कुछ भी बिगड़ा है
देखो अभी सुयोग तुम्हारे पास खड़ा है
करना है जो काम उसी में चित्त लगा दो
अपने पर विश्वास रखो, संदेह भगा दो।
उद्योगी को कहीं सुसमय मिल जाता
समय नष्ट कर सुख कोई नहीं पाता
आलस ही है करा रहा ये सभी बहाने
जो करना हो करो अभी कल क्या हो जाने
ऐसा सुसमय भला और कब तुम पाओगे,
खोकर पीछे इसे सदा ही पछताओगे।

1. कवि की चेतावनी है–
(क) स्वयं को सुधार लो (ख) समय क्षणिक है
(ग) समय नष्ट मत करो (घ) सारे बहाने आलस के हैं।

2. किसे नष्ट करके सुख नहीं मिलता–
(क) धन को (ख) समय को
(ग) संदेह को (घ) आलस को।

3. किसको सुसमय की प्रतीक्षा नहीं करनी पड़ती–
(क) उद्योगी को (ख) आलसी को
(ग) आत्मविश्वासी को (घ) संदेही को।

4. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–
कथन (A)–ऐसा सुंदर समय तुम कभी प्राप्त नहीं कर पाओगे।
कारण (R)–इसे खोकर तुम्हें पश्चात्ताप नहीं होगा।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. 'उद्योगी' शब्द का समानार्थी शब्द है–

(क) उद्यान (ख) भोग करना

(ग) साहसी (घ) परिश्रमी।

उत्तर— 1. (ग) 2. (ख) 3. (क) 4. (ग) 5. (घ)।

(4) आज की यह सुबह है बहुत प्रीति कर कह रही उठ नया काम कर, नाम कर।
जो अधूरी रही वह सुबह कल गई, मान ले अब यही कुछ कमी रह गई,
ले नई ताज़गी यह सुबह आ गई, कह रही–मीत उठ बात कर कुछ नई,
ओ सृजन-दूत तू, शक्ति-संभूत तू, क्यों खड़ा राह में अश्व यों थामकर।
दूसरों की बनाई डगर छोड़ दे, तू नई राह पर कारवाँ मोड़ दे,
फोड़ दे तू शिलाएँ चुनौती-भरी, क्रूर अवरोध को निष्करुण तोड़ दे।
व्यर्थ जाने न पाए महापर्व यह–जो स्वयं आ गया आज तेरी डगर।
अब नए मार्ग पर रथ नए हाँकने, हर अँधेरे से दीपक लगे झाँकने,
बंद, अज्ञात थी आज तक जो दिशा–उस दिशा को नए नाम हैं बाँटने,
मोड़ लो सूर्य का रथ, विपथ पथ बने–बढ़ चलो विघ्न व्यवधान सब लाँघकर।

1. आज की सुबह क्या संदेश दे रही है–

(क) नया काम करके नाम करने का

(ख) अपनी कमियाँ स्वीकार करने का

(ग) नए संदर्भों की बात करने का

(घ) उपर्युक्त सभी।

2. ताज़गी से भरी हुई सुबह मानव से क्या कह रही है–

(क) पुरानी बातों को भूल जाओ

(ख) जीवन में कुछ नया कार्य करो

(ग) दूसरों की बनाई डगर छोड़ दो

(घ) अवरोधों को क्रूरतापूर्वक तोड़ दो।

3. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–

कथन (A)–आज की सुबह नई ताज़गी लेकर आई है।

कारण (R)–यह कुछ नई बात करने के लिए कह रही है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. कविता में निष्करुण का अर्थ है–

(क) करुण के साथ (ख) करुणा को त्यागकर

(ग) क्रूरतापूर्वक (घ) करुणापूर्वक।

5. उपर्युक्त काव्यांश के लिए उपयुक्त शीर्षक है–

(क) आज की यह सुबह (ख) सृजन-दूत

(ग) सूर्य का रथ (घ) विपथ।

उत्तर— 1. (घ) 2. (ख) 3. (ग) 4. (ग) 5. (क)।

(5) जिस पर गिरकर उदर-दरी से तुमने जन्म लिया है,
जिसका खाकर अन्न, सुधा-सम नीर, समीर पिया है।
वह स्नेह की मूर्ति दयामयी माता तुल्य मही है।
उसके प्रति कर्त्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है?
केवल अपने लिए सोचते, मौज भरे गाते हो।
पीते, खाते, सोते, जगते, हँसते, सुख पाते हो।
जग से दूर, स्वार्थ-साधन ही सतत तुम्हारा यश हो।
सोचो तुम्हीं, कौन अग-जग में तुम-सा स्वार्थ विवश है?
पैदा कर जिस देश-जाति ने तुमको पाला-पोसा,
किए हुए है वह निज-हित का तुमसे बड़ा भरोसा।
उससे होना उऋण प्रथम है सत्कर्त्तव्य तुम्हारा।
फिर दे सकते हो वसुधा को शेष स्वजीवन सारा।

1. मातृभूमि से हमने क्या प्राप्त किया है–

(क) अन्न (ख) सुधा समान जल

(ग) वायु (घ) ये सभी।

2. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–

कथन (A)–स्नेहमयी और दयामयी भारत भूमि माता के समान है।

कारण (R)–वह तुमसे अपने कल्याण का बड़ा भरोसा किए हुए है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. मनुष्य को किस कर्त्तव्य के प्रति प्रेरित किया गया है–

(क) देश व जाति के प्रति सेवाभाव

(ख) स्वार्थ-साधन करना

(ग) विश्व-कल्याण करना

(घ) जप-तप करना।

4. कवि के अनुसार मनुष्य का प्रथम कर्त्तव्य क्या होना चाहिए–

(क) माता-पिता के ऋण से उऋण होना

(ख) देश-जाति के ऋण से उऋण होना

(ग) गुरु के ऋण से उऋण होना

(घ) महाजन के ऋण से उऋण होना।

5. काव्यांश का मुख्य संदेश क्या है–

(क) सेवाभाव (ख) परोपकार

(ग) दानशीलता (घ) देशप्रेम।

उत्तर— 1. (घ) 2. (ख) 3. (क) 4. (ख) 5. (घ)।

(6) मेरा माँझी मुझसे कहता रहता था,
बिना बात तुम नहीं किसी से टकराना।
पर जो बार-बार बाधा बनकर आएँ
उनके सिर को वहीं कुचलकर बढ़ जाना।
जान-बूझ कर मेरे पथ में आती हैं,
भवसागर की चलती-फिरती चट्टानें।
मैं इनसे जितना ही बचकर चलता हूँ,
उतना ही मिलती हैं ये ग्रीवा ताने।
रख अपनी पतवार, कुदाली लेकर मैं,
तब मैं इनका उन्नत भाल झुकाता हूँ।
राह बनाकर नाव बढ़ाए जाता हूँ।
जीवन की नैया का चतुर खिवैया मैं
भवसागर में नाव बढ़ाए जाता हूँ।

1. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–

कथन (A)–मैं जीवन-नौका का चतुर नाविक हूँ।

कारण (R)–भवसागर में अपनी नौका आगे बढ़ाए जाता हूँ।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

2. कवि किसे कुचलकर आगे बढ़ने की बात करता है–

(क) बाधाओं को (ख) काँटों को

(ग) फूलों को (घ) घास को।

3. **कवि चट्टानों का उन्नत भाल किससे झुकाता है–**

(क) अपनी पतवार से (ख) अपनी कुदाली से

(ग) अपनी नाव से (घ) अपनी तलवार से।

4. **कवि जीवन-नैया का कैसा खिवैया है–**

(क) अकुशल (ख) चतुर

(ग) साहसी (घ) इनमें से काई नहीं।

5. **कवि कहाँ नाव बढ़ाए जाता है–**

(क) झील में (ख) तालाब में

(ग) नदी में (घ) भवसागर में।

उत्तर— 1. (घ) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(7) मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन–
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।
गान अर्पित, प्राण अर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँज दो तलवार को, लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी।
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

1. **कवि किसके प्रति तन-मन-जीवन समर्पित करना चाहता है–**

(क) माता के (ख) पिता के

(ग) मातृभूमि के (घ) जाति के।

2. **कवि मातृभूमि से कौन-सा समर्पण स्वीकार करने का निवेदन करता है–**

(क) थाल में सजे फूल (ख) थाल में सजी मिठाइयाँ

(ग) थाल में सजे फल (घ) थाल में सजा मस्तक।

3. **कवि मातृभूमि का ऋण क्यों नहीं उतार सकता–**

(क) वह अकिंचन है (ख) वह कृतघ्न है

(ग) वह संवेदनहीन है (घ) वह अज्ञानी है।

4. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–हे देश की धरती! तुझ पर मेरा तन, मन, जीवन समर्पित है।

कारण (R)–जब मैं थाल में अपना मस्तक सजाकर लाऊँ तो उसे स्वीकार कर लेना।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

5. **कवि शीश पर किसकी छाया चाहता है–**

(क) आशीष की (ख) वृक्षों की

(ग) छाते की (घ) बादलों की।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (क)।

(8) राख बनकर रह न जाए घर हमारा,
आग से बढ़कर हमें है डर तुम्हारा,
देश का नैतिक पतन उत्थान पर है
सभ्यता इस देश की प्रस्थान पर है।
आचरण बिलकुल अपावन हो चुके हैं
हो सके तो आदमी बनकर दिखाओ।
आज घर की आग से घर को बचाओ।
देश का धन लूटकर घर भर रहे हो
किंतु तुम चर्चा पराई कर रहे हो,
आग है चारों तरफ़, पानी नहीं है
एक भी बादल यहाँ दानी नहीं है।
तुम धरा की प्यास पर बरसो न बरसो,
इस चमन पर बिजलियाँ तो मत गिराओ।
आज घर की आग से घर को बचाओ।

1. **कविता में घर किसका प्रतीक है–**

(क) मकान का (ख) गुफा का

(ग) देश का (घ) झोंपड़ी का।

2. **देश के लोगों का आचरण कैसा हो गया है–**

(क) निकृष्ट (ख) उत्कृष्ट

(ग) अपावन (घ) पावन।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–देश का नैतिक पतन पराकाष्ठा पर है।

कारण (R)–देश की सभ्यता समाप्त हो रही है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **कवि किस पर बिजलियाँ न गिराने की बात करता है–**

(क) घर पर (ख) चमन पर

(ग) पेड़ पर (घ) आदमियों पर।

5. **काव्यांश में 'पतन' का विलोम शब्द क्या है–**

(क) प्रस्थान (ख) उत्थान

(ग) अपावन (घ) पराई।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ख)।

(9) साक्षी है इतिहास हमीं पहले जागे हैं,
जाग्रत सब हो रहे हमारे ही आगे हैं।
शत्रु हमारे कहाँ नहीं भय से भागे हैं?
कायरता से प्राण कहाँ हमने त्यागे हैं?
हैं हमीं प्रकंपित कर चुके, सुरपति तक का भी हृदय!
फिर एक बार हे विश्व! तुम, गाओ भारत की विजय!
कहाँ प्रकाशित नहीं रहा है तेज हमारा,
दलित कर चुके शत्रु सदा हम पैरों द्वारा।
बतलाओ तुम कौन नहीं जो हमसे हारा,
पर शरणागत हुआ कहाँ, कब हमें न प्यारा!
बस युद्ध-मात्र को छोड़कर, कहाँ नहीं हैं हम सदय!
फिर एक बार हे विश्व! तुम, गाओ भारत की विजय!

1. **कविता में 'हमीं' शब्द किसके लिए आया है–**

(क) भारत के लोगों के लिए (ख) विश्व के लोगों के लिए

(ग) सोते हुए लोगों के लिए (घ) जागते हुए लोगों के लिए।

2. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–इतिहास साक्षी है कि सबसे पहले हमने ही ज्ञान प्राप्त किया है।

कारण (R)–हमने इंद्र के हृदय को भी भयभीत किया है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

3. **शरणागत वात्सल्य का भाव किस भूमि पर देखने को मिलता है–**

(क) उर्वर भूमि पर (ख) भारतभूमि पर
(ग) ऊसर भूमि पर (घ) विदेशी भूमि पर।

4. **'हम' किसके हृदय को प्रकंपित कर चुके हैं–**

(क) इंद्र के (ख) असुरों के
(ग) विष्णु के (घ) शत्रु के।

5. **कविता का उचित शीर्षक दीजिए–**

(क) साक्षी है इतिहास (ख) तेज़ हमारा
(ग) हे विश्व (घ) कायरता।

उत्तर– 1. (क) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (क) **5.** (क)।

(10) तुम भीख अन्न की द्वार-द्वार में माँग रहे
तुम भीख द्रव्य की द्वार-द्वार में माँग रहे
क्या आज़ादी से मिली तुम्हें यह आज़ादी
तुम कर्ज़ काढ़कर समझे मार छलाँग रहे?
यह कौम देश की जब-जब कर्ज़ चुकाएगी
इस आज़ादी की याद हमेशा आएगी!
बेड़ियाँ कर्ज़ की और न बाँधो पाँवों में
क्या इससे हमको नींद चैन की आएगी?
है एक गुलामी हटी, दूसरी फिर आई,
यह मर्ज़ हमारा और बढ़ गया सालों का।
पीछे झंडा फहराना ऐ झंडे वालो!
पहले जवाब दो मेरे चंद सवालों का।

1. **कविता में कवि ने किस समस्या की ओर देशवासियों का ध्यान खींचा है–**

(क) आतंकवाद की (ख) विदेशों से कर्ज़ लेने की
(ग) भ्रष्टाचार की (घ) सवाल पूछने वालों की।

2. **यहाँ 'तुम' कहकर किसे संबोधित किया गया है–**

(क) सरकार को (ख) राजनेताओं को
(ग) देश के लोगों को (घ) गुलामों की।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–हमारे पाँवों में कर्ज़ की और बेड़ियाँ मत बाँधो।

कारण (R)–एक गुलामी दूर हुई तो दूसरी आ गई।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **झंडा फहराने से पहले कवि देश की जनता और नेताओं से क्या माँगता है–**

(क) चंद सवालों के जवाब (ख) कर्ज़
(ग) आज़ादी (घ) भीख।

5. **प्रस्तुत काव्यांश का उचित शीर्षक दीजिए–**

(क) भीख (ख) मर्ज़
(ग) गुलामी (घ) चंद सवाल।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (घ)।

(11) आ रही रवि की सवारी।
नव किरण का रथ सजा है,
कलि-कुसुम से पथ सजा है,
बादलों-से अनुचरों ने स्वर्ण की पोशाक धारी।
आ रही रवि की सवारी।
विहग बंदी और चारण,
गा रही हैं कीर्ति-गायन,
छोड़कर मैदान भागी, तारकों की फ़ौज सारी।
आ रही रवि की सवारी,
चाहता, उछलूँ विजय कह,
पर ठिठकता देखकर यह–
रात का राजा खड़ा है, राह में बनकर भिखारी।
आ रही रवि की सवारी।

1. **कविता में किस समय का वर्णन है–**

(क) उषा का (ख) संध्या का
(ग) दोपहर का (घ) रात्रि का।

2. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–सूर्य की सवारी आ रही है।

कारण (R)–नव किरण से पथ सजा हुआ है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **'स्वर्ण की पोशाक धारी' से क्या तात्पर्य है–**

(क) सोने के वस्त्र पहने हुए हैं
(ख) अनुचरों ने सुनहरी पोशाक पहनी है
(ग) बादलों का रंग लाल हो गया है
(घ) बादलों में स्वर्णिम आभा झलक उठी है।

4. **रवि के आते ही कौन भाग खड़ा हुआ है–**

(क) चाँद (ख) तारों की फ़ौज
(ग) अंधकार (घ) रात का राजा।

5. **'विहग' की तुलना किससे की गई है–**

(क) कवि से (ख) भाट-चारण से
(ग) गायक से (घ) प्रशंसक से।

उत्तर– 1. (क) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ख)।

(12) यत्न से पुरुषार्थ से, सब लक्ष्य आते हैं निकट,
इंसानियत सुविचार से, घटतीं समस्याएँ विकट।
रश्मि रवि की चीरती हैं वक्ष काली रात का,
शौर्य-साहस-शील-बल, समझो उदय है प्रात का।
वीर संयमशील मानव, कामना आस्वाद की।
हैं नहीं करते, उन्हें चिंता सदा मर्याद की।
सामर्थ्य यदि निज पास हो, शंका न हो अवसाद की,
वीरभोग्य वसुंधरा ही, मूल पुण्य प्रसाद की।
कीर्ति-यश-सम्मान के अवसर सहज मिलते नहीं,
व्यस्त वीरों के कदम, आपत्ति में डिगते नहीं।
हम बढ़ें संकल्प लें, गंतव्य भी मिल जाएगा,
लगन के आगे न कोई दुःख भला टिक पाएगा।
विफलता का भूत लेकर उत्कर्ष मिल सकता नहीं,
कठिन व्रत साधे बिना कोई सफल होता नहीं।

1. **व्यक्ति को लक्ष्य प्राप्त होता है–**
   (क) अभीष्ट मार्ग चुन लेने से
   (ख) उत्कर्ष की ओर बढ़ने से
   (ग) प्रयत्न एवं पुरुषार्थ से
   (घ) विफलता से बचने के प्रयास से।
2. **किस मनुष्य को अवसाद की शंका नहीं होती–**
   (क) जो निर्भय हो (ख) जिसके पास सामर्थ्य हो
   (ग) जो विचारशील हो (घ) जो दृढ़-संकल्प वाला हो।
3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   कथन (A) वीर संयमशील मनुष्य अवसाद की कामना नहीं करते हैं।
   कारण (R) उन्हें सदा अपनी मर्यादा की चिंता रहती है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
4. **जीवन की कठिन समस्याओं का समाधान किसमें निहित है–**
   (क) मानवता और विचारशीलता में
   (ख) उदारता और प्रेम में
   (ग) कार्यकुशलता में
   (घ) श्रमशील जीवन में।
5. **'रश्मि रवि की चीरती हैं वक्ष काली रात का' में कौन-सा अलंकार है–**
   (क) उपमा (ख) मानवीकरण
   (ग) रूपक (घ) श्लेष।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख)।

(13) कब से जल-बूँदों के विह्वल शैल निहार रहे,
कब से आतप-दग्ध वनों के प्राण पुकार रहे,
मन जलता है जैसे तृष्णा का क्षण जलता है
सूखे मूल कगारों का वीरान मचलता है
आज मधुर स्वप्नों में पावस का आकाश भरा।
गीतों की गूँजों से मर्मर का उल्लास हरा।
ओ मादक उन्मादक बादल बे-बरसे मत जा!
जाग उठी मरु-मरु में सुख की वाष्पानुकूल आशा।
इस निदाघ से जला प्रकृति का रोम-रोम प्यासा
थकी अनमनी धूप माँगती है जलमय बाँहें।
डूब गई तम में नीडानुकूल विहगों की छाँहें।

1. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–हे मादक उन्मादक बादल! बिना बरसे मत जाना।
   कारण (R)–थकी अनमनी धूप वर्षा माँग रही है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
2. **वन और पर्वत बेचैन हैं; क्योंकि वे–**
   (क) वीरान हैं (ख) गरमी से जल रहे हैं
   (ग) बादलों की प्रतीक्षा कर रहे हैं (घ) वे प्यासे हैं।
3. **कवि ने बादलों को कैसा बताया है–**
   (क) मादक और उन्मादक (ख) शांत और शीतल
   (ग) निर्मम व कठोर (घ) सुखद और जलमय।
4. **'थकी अनमनी धूप माँगती है जलमय बाँहें' पंक्ति में निहितार्थ है–**
   (क) धूप छाया माँग रही है
   (ख) धूप भी वर्षा की कामना कर रही है
   (ग) धूप थककर बेचैन हो उठी है
   (घ) धूप व्याकुल हो रही है।
5. **शैल का पर्यायवाची है–**
   (क) प्रस्तर (ख) पाषाण
   (ग) गिरि (घ) पत्थर।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (क) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(14) ग्राम, नगर या कुछ लोगों का
काम नहीं होता है देश।
संसद, सड़कों, आयोगों का
नाम नहीं होता है देश।
देश नहीं होता है केवल
सीमाओं से घिरा मकान।
देश नहीं होता है कोई
सजी हुई ऊँची दुकान।
देश नहीं क्लब जिसमें बैठ
करते रहें सदा हम मौज।
देश नहीं केवल बंदूकें
देश नहीं होता है फ़ौज।
जहाँ प्रेम के दीपक जलते,
वहीं हुआ करता है देश।
जहाँ इरादे नहीं बदलते
वहीं हुआ करता है देश।
सज्जन सीना ताने चलते
वहीं हुआ करता है देश।
हर दिल में अरमान मचलते
वहीं हुआ करता है देश।
देश वही होता जो सचमुच
आगे बढ़ता क़दम-क़दम।
धर्म-जाति भाषाएँ जिसका
ऊँचा रखती हैं परचम।
पहले हम ख़ुद को पहचानें
फिर पहचानें अपना देश।
एक दमकता सत्य बनेगा,
नहीं रहेगा सपना देश।

1. **कवि ने किन्हें देश नहीं माना है–**
   (क) सज्जनों की स्वतंत्रता को
   (ख) दूसरों की दृढ़ता को
   (ग) ग्राम, नगर, संसद, सड़क, आयोग, दुकान, बंदूक, लोग आदि को
   (घ) सभी धर्म-जाति और भाषाओं के गौरव को।
2. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–देश सीमाओं से घिरा कोई मकान नहीं है।
   कारण (R)–देश एक सजी हुई दुकान है।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
3. **काव्यांश का मूलभाव क्या है–**
   (क) भौतिक वस्तुओं से देश का विकास देखा जाता है
   (ख) देश भौगोलिक सीमाओं से होता है
   (ग) देश लोगों से होता है
   (घ) देशवासियों के इरादों, प्रेम, भाईचारे तथा एकता से देश की प्रगति देखी जा सकती है।
4. **''पहले हम ख़ुद को पहचानें, फिर पहचानें अपना देश'' पंक्ति का क्या आशय है–**
   (क) पहले अपने गुणों को जानें तभी देश को जान सकते हैं
   (ख) हम जातिगत भेदभाव की संकीर्णताओं से ऊपर उठें तो देश भी इन सीमाओं से ऊपर उठ जाएगा
   (ग) हम अपनी आवश्यकताओं को जानें
   (घ) हम अपनी कमियों को पहचानें।

5. **काव्यांश का उपयुक्त शीर्षक होगा–**

(क) सपना देश (ख) दमकता सत्य

(ग) देश (घ) देश नहीं है।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (घ) **4.** (ख) **5.** (ग)।

(15) आज की दुनिया विचित्र, नवीन;
प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन
हैं बँधे नर के करों में वारि, विद्युत, भाप
हुक्म पर चढ़ता-उतरता है पवन का ताप।
हैं नहीं बाकी कहीं व्यवधान,
लाँघ सकता नर सरित, गिरि, सिंधु एकसमान।
शीश पर आदेश कर अवधार्य,
प्रकृति के सब तत्त्व करते हैं मनुज के कार्य।
मानते हैं हुक्म मानव का महा वरुणेश,
और करता शब्दगुण अंबर वहन संदेश।
नव्य नर की मुष्टि में विकराल,
हैं सिमटते जा रहे प्रत्येक क्षण दिक्काल।
यह प्रगति निस्सीम! नर का यह अपूर्व विकास!
चरण-तल भूगोल! मुट्ठी में निखिल आकाश!
किंतु, है बढ़ता गया मस्तिष्क ही निःशेष,
छूटकर पीछे गया है रह हृदय का देश;
नर मनाता नित्य नूतन बुद्धि का त्योहार,
प्राण में करते दुःखी हो देवता चीत्कार।

1. **आज का संसार नवीन और विचित्र क्यों है–**

(क) मनुष्य ने प्रगति की है

(ख) पहले की तुलना में संसार बड़ा हो गया है

(ग) प्रकृति पर मनुष्य ने विजय प्राप्त कर ली है

(घ) विज्ञान ने मनुष्य को अपने अधीन कर लिया है।

2. **''छूटकर पीछे गया है रह हृदय का देश'' पंक्ति का तात्पर्य है–**

(क) हृदय का देश पीछे छूट गया है

(ख) बुद्धि के क्षेत्र में निस्सीम प्रगति हुई है

(ग) मनुष्य की प्रगति निस्सार है

(घ) बुद्धि की दौड़ में हृदय या मन की भावनाएँ पीछे छूट गई हैं।

3. **'बुद्धि का त्योहार' का क्या अर्थ है–**

(क) हर त्योहार बुद्धिपूर्वक मनाता है

(ख) त्योहार के दिन नूतन बुद्धि होती है

(ग) मनुष्य अपने बुद्धि-बल पर प्रसन्न होता है

(घ) बुद्धि से ही त्योहार आते हैं।

4. **'सिंधु' का पर्यायवाची शब्द है–**

(क) तड़ाग (ख) सागर (ग) सर (घ) जलद।

5. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–जल, विद्युत और भाप मनुष्य के हाथों में बँधे हुए हैं।

कारण (R)–उसके आदेशानुसार वायु का ताप चढ़ता और उतरता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(16) हो गई है पीर पर्वत-सी पिघलनी चाहिए।
इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।।
आज यह दीवार, परदों की तरह हिलने लगी,
शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।।
हर सड़क पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।।
सिर्फ़ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।।

1. **आग किसकी प्रतीक है–**

(क) जलन की (ख) युद्ध की

(ग) क्रोध की (घ) विद्रोह या क्रांति की।

2. **कवि क्या करना चाहता है–**

(क) हंगामा खड़ा करना चाहता है

(ख) समाज में बदलाव लाना चाहता है

(ग) उथल-पुथल मचा देना चाहता है

(घ) सब कुछ जला डालना चाहता है।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–मेरा उद्देश्य केवल हंगामा खड़ा करना नहीं है।

कारण (R)–आग कहीं भी हो, लेकिन जलनी चाहिए।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **'हर लाश' से कवि का क्या अभिप्राय है–**

(क) मुर्दा व्यक्ति

(ख) लाश की तरह निष्क्रिय व निरुत्साहित व्यक्ति

(ग) लाश की तरह शांत व्यक्ति

(घ) अज्ञानी व नासमझ व्यक्ति।

5. **कवि दीवारों की जगह किसे हिलाना चाहता है–**

(क) घर को (ख) नींव को

(ग) जड़ को (घ) छत को।

उत्तर– 1. (घ) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (ख)।

(17) गुलाब के फूल-सा दिन, चाँद के निखार-सी रात
हाशिये पे अब नहीं हूँ मैं, मेरी भी हो रही है बात।
वक्त जो नहीं था कल मेरा, आज मेरे साथ है खड़ा
मेरे साथ चल रहे हैं वो, जो कह रहे थे अपने को बड़ा।
धूप के हिसाब का दिन, जीत के निनाद की रात।।
जो मिला वही तो अब हुआ मेरी दोस्ती को बावला
पंछियों की उड़ान-सा दिन, जुगनुओं के जश्न-सी रात।।
भूलकर भी अब नहीं कोई है ताकती विषाद की घड़ी
जा खड़े हैं दूर सारे गम, आ रही है झूमती खुशी।
धवल जलप्रपात-सा दिन, गोरी गट काँच-सी रात।।

1. **''हाशिये पर अब नहीं हूँ मैं'' का आशय है–**

(क) कवि अब संपन्न हो गया है

(ख) कवि अब समाज का नेता बन गया है

(ग) कवि अब पहले की तरह उपेक्षित नहीं है

(घ) कवि के अब मित्र बन गए हैं।

2. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–वह समय जो कल तक मेरा नहीं था, आज मेरे साथ खड़ा है।

कारण (R)–जो स्वयं को बड़ा कहते थे, वे मेरे साथ चल रहे हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

3. **'वक्त जो नहीं था कल मेरा, आज मेरे साथ है खड़ा' का भाव है–**

(क) आज समय मेरे अनुकूल है

(ख) आज मैं समय की परवाह नहीं करता

(ग) आज समय मेरे लिए महत्त्वहीन हो गया है

(घ) आज समय मेरी मुट्ठी में है।

4. **कवि के साधनसंपन्न होने पर सभी लोग अब–**

(क) उससे विमुख रहना बनाना चाहते हैं

(ख) कभी साथ नहीं बैठते

(ग) दोस्ती के लिए लालायित रहते हैं

(घ) उससे ईर्ष्या करते हैं।

5. **'धवल जलप्रपात-सा दिन' में कौन-सा अलंकार है–**

(क) उपमा (ख) रूपक

(ग) यमक (घ) उत्प्रेक्षा।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (क)।

(18) पूरित कर जन-मन अभिलाषा, हिंदी बने देश की भाषा।
परित्याग कर हीनभावना, घर-घर पहुँचाए निज भाषा।।
देख उपेक्षित हिंदी वाणी असंतोष का ज्वार उठ रहा।
सम्मानित परदेशी भाषा हिंदी का सर्वस्व लुट रहा।।
लड़े युद्ध वीरों ने बढ़-बढ़, क्रांति-गीत हिंदी में गाकर।
राष्ट्र समूचे के दिल जोड़े, रखी एकता पथ पर लाकर।।
हिंदी भाषा विस्तृत सागर, बढ़ें पोत भावों के प्रति पल।
भाव व्यक्त करने में सक्षम, पवन-वेग धारा-सी कल-कल।।
शब्दकोश का विशद कलेवर, स्वर लय छंद रसों का सरगम।
देवनागरी लिपि है अनुपम, नित नव ताल भाव का उद्गम।।

1. **हिंदी के प्रयोग और प्रचार में क्या बाधक है–**

(क) हमारी उदारता (ख) हमारी अज्ञानता

(ग) हमारी हीनभावना (घ) हमारी झूठी शान।

2. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–हिंदी को उपेक्षित देखकर मन में असंतोष उत्पन्न होता है।

कारण (R)–विदेशी भाषा सम्मानित हो रही है और हिंदी का सर्वस्व लुट रहा है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही है, किंतु (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **हिंदी भाषा का क्या योगदान है–**

(क) विभिन्न धर्मों को जोड़ना

(ख) देश को एकता के सूत्र में बाँधना

(ग) विभिन्न जातियों को मिलाना

(घ) संसार में देश का सम्मान बढ़ाना।

4. **वीरों ने युद्ध कैसे लड़े–**

(क) अंग्रेज़ी में प्रयाण गीत गाकर

(ख) हिंदी में क्रांति-गीत गाकर

(ग) हिंदी में देशगान गाकर

(घ) अंग्रेज़ी में क्रांति-गीत गाकर।

5. **'पवन-वेग धारा-सी कल-कल' में अलंकार है–**

(क) अनुप्रास (ख) उत्प्रेक्षा

(ग) यमक (घ) उपमा।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (घ) **3.** (ख) **4.** (ख) **5.** (घ)।

(19) शहर की इस भागती-दौड़ती ज़िंदगी में
सुबह होते ही शुरू हो जाती है दौड़।
हर कोई भाग रहा लेकर दुपहिया, तिपहिया
कोई कार में सवार तो कोई पैदल ही निकल पड़ा
अपने गंतव्य की ओर।
चारों ओर हैं आवाज़ें कहीं मोटरों के हार्न की
कहीं टेंपो, रिक्शा और ठेलों की ठेलमठेल
कहीं ट्रकों की दूर तक लंबी कतार
तो कहीं रेलगाड़ियों की गड़गड़ाहट का शोर।
होती है उठापटक, छोटे-बड़े सामान की
कोई बँधा तो कोई खुला
कोई इस हाथ में तो कोई उस हाथ में
हर तरफ़ धुंध है, चेहरे भी धुँधलाए-से
कोई इंतज़ार करता है अपनों का
तो कोई डूबा है बिछोह के गम में
कोई मुस्कराया है कि घर अपने आया है
इसी बीच कोई मिलता है तो कोई बिछुड़ता है
कोई रोता है तो कोई सिसकता है
कोई झिझकता है तो कोई ठिठकता है।

1. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–शहर का जीवन भाग-दौड़ का जीवन है।

कारण (R)–चारों ओर वाहनों की आवाजें हैं।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

2. **'कोई मुस्कराया है' क्या इसका कारण यह है–**

(क) कि वह आराम से बैठा है

(ख) कि वह अपने घर आया है

(ग) कि उसका काम हो गया है

(घ) कि उसकी इच्छा पूरी हो गई है।

3. **'हर कोई भाग रहा', कहने का तात्पर्य है–**

(क) सब दौड़ में हिस्सा ले रहे हैं

(ख) हर कोई एक-दूसरे से आगे निकल जाना चाहता है

(ग) हर कोई अपनी मंज़िल पर समय से पहुँचना चाहता है

(घ) सब एक-दूसरे की देखा-देखी भाग रहे हैं।

4. **'होती है उठापटक, छोटे-बड़े सामान की'–यह पंक्ति प्रतीक है–**
(क) दैनिक जीवन के क्रिया-कलापों की
(ख) आपस में लड़ाई-झगड़ा शुरू होने की
(ग) रेलगाड़ी से सामान फेंके जाने की
(घ) सब काम खत्म हो जाने की।

5. **'हर तरफ़ धुंध है'–इस पंक्ति से शहरों के संबंध में क्या कहा गया है–**
(क) शहरों में कोहरा छाया रहता है
(ख) शहरों में बहुत प्रदूषण है
(ग) शहरों में धुआँ छाया रहता है
(घ) शहरों में व्यस्तता की थकान और उदासी पसरी है।

उत्तर– 1. (घ) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (क) **5.** (घ)।

(20) छोटे, तारों-से छितरे, फूलों के छींटे
झागों-से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर
सुंदर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से,
चोटी के मोती-से, आँचल के बूँटों-से!
ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटीं!
कितनी सारी फलियाँ! कितनी प्यारी फलियाँ!
यह धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को!
बचपन में, छिः स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर!
रत्नप्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ!
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं-
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की, जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ!
हम जैसा बोएँगे, वैसा ही पाएँगे!

1. **कविता क्या संदेश देती है–**
(क) मेहनत से मानवता की फसल उगाकर सबको सुखी बनाएँ
(ख) धन का मोह व स्वार्थ का त्याग करें
(ग) सभी का सम्मान करें
(घ) देश के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करें।

2. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–धरती माता अपने पुत्रों को बहुत अधिक देती है।
कारण (R)–इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

3. **फलियाँ देखकर कवि को क्या समझ आया–**
(क) धरती की ममता
(ख) धरती की सहनशीलता
(ग) धरती की उदार भाव से देने की क्षमता
(घ) धरती की समता।

4. **'छिः स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर', का आशय है कि कवि–**
(क) स्वार्थ के कारण अज्ञानी हो गया
(ख) लोभवश वास्तविकता को समझ न सका
(ग) लोभी हो गया था
(घ) सांसारिक लगाव प्रबल हो गया।

5. **'रत्नप्रसविनी' का अर्थ है–**
(क) रत्नों की खान (ख) रत्नों की जननी
(ग) रत्नों की देवी (घ) रत्न दान करने वाली।

उत्तर– 1. (क) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (ख)।

(21) मैंने देखा-
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके नीचे कुछ छोटे-छोटे पौधे
बड़े सुशील विनम्र
देखकर मुझको यों बोले–
हम भी कितने खुशकिस्मत हैं
जो खतरों का नहीं सामना करते
आसमान से पानी बरसे, आँधी गरजे
बिजली कड़के, आगी बरसे
हमको कोई फ़िक्र नहीं है
एक बड़े की वरद छत्रछाया के नीचे
हम अपने दिन बिता रहे हैं
बड़े सुखी हैं।
एक बड़ा बरगद का पेड़ खड़ा है
उसके नीचे कुछ छोटे-छोटे पौधे
असंतुष्ट और रुष्ट
देखकर मुझको यों बोले
हम भी कितने बदकिस्मत हैं,
जो खतरों का नहीं सामना करते
वे कैसे ऊपर को उठ सकते हैं
इसी बड़े की छाया ने ही
हमको बौना बना रखा है
हम बड़े दुःखी हैं।

1. **कविता में 'बरगद' किसका प्रतीक है–**
(क) छायादार वृक्ष का
(ख) समाज के प्रतिष्ठित धनी वर्ग का
(ग) घर के बड़े-बुजुर्गों का
(घ) किसी दयालु व्यक्ति का।

2. **'छोटे-छोटे पौधे' से आशय है–**
(क) नई पीढ़ी
(ख) समाज का शोषित-वर्ग
(ग) गरीब लोग
(घ) असुरक्षित युवा।

3. **पहली पीढ़ी स्वयं को भाग्यशाली क्यों मानती है–**
(क) संघर्षपूर्ण जीवन है
(ख) वह खतरों का सामना करती है
(ग) वह बेफ़िक्र जीती है
(घ) उसे मेहनत नहीं करनी पड़ती।

4. **दूसरी नई पीढ़ी असंतुष्ट और रुष्ट क्यों है–**
(क) धूप-हवा हमेशा बरगद को ही मिलती है
(ख) उन्हें ऊपर उठने के लिए जगह नहीं मिलती
(ग) चौबीसों घंटे छाया में ही रहना पड़ता है
(घ) संघर्षों के अभाव में उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास नहीं हो पाता।

5. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–बड़े बरगद के नीचे खड़े छोटे पौधे खुशकिस्मत हैं।

कारण (R)–उन्हें खतरों का सामना करना पड़ता है।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।

(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (क) **3.** (ग) **4.** (घ) **5.** (ख)।

(22) शीश पर मंगल-कलश रख
भूलकर जन के सभी दुःख
चाहते हो तो मना लो जन्मदिन भूखे वतन का।
जो उदासी है हृदय पर
वह उभर आती समय पर
पेट की रोटी जुड़ाओ
रेशमी झंडा उड़ाओ
ध्यान तो रक्खो मगर उस अधफटे नंगे बदन का।
तन कहीं पर, मन कहीं पर
धन कहीं, निर्धन कहीं पर
फूल की ऐसी विदाई
शूल को आती रुलाई
आँधियों के साथ जैसे हो रहा सौदा चमन का।
आग ठंडी हो, गरम हो
तोड़ देती है भरम को
क्रांति है आनी किसी दिन
आदमी घड़ियाँ रहा गिन
राख कर देता सभी कुछ अधजला दीपक भवन का
जन्मदिन भूखे वतन का।

1. **कवि देश के शासकों से क्या करने के लिए कह रहा है–**

(क) राष्ट्रीय समस्याओं को सुलझाने के लिए

(ख) लोगों की उदासी और दुःखों को दूर करने के लिए

(ग) समय की गति और परिस्थितियों की विषमता समझने के लिए

(घ) भूखों को भोजन-पानी देने के लिए।

2. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–भूखे वतन का जन्म दिन मनाना चाहते हो तो मना लो।

कारण (R)–अधफटे नंगे बदन का भी ध्यान रखो।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **'आग ठंडी हो, गरम हो' का प्रतीकार्थ है–**

(क) क्रोध मंद हो या उग्र

(ख) आक्रोश धीमा हो या तीव्र

(ग) क्रांति शिथिल हो या उग्र

(घ) हिंसा सीमित हो या असीमित।

4. **'आँधियों के साथ जैसे हो रहा सौदा चमन का' से आशय है–**

(क) आँधियों के झटकों को झेलना उपवन की विवशता हो गई है

(ख) देश का जनसमुदाय कठिनाइयों और कष्टों को सह रहा है

(ग) देश की निरीह जनता कुशासन को सहने की अभ्यस्त हो गई है

(घ) देश के शासक जनता के शोषकों के साथ समझौता कर रहे हैं।

5. **'चमन' का पर्याय नहीं है–**

(क) बगीचा (ख) उद्यान

(ग) वाटिका (घ) विपिन।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (क) **3.** (ख) **4.** (घ) **5.** (घ)।

(23) एक सुनहली किरण उसे भी दे दो
भटक रहा जो आँधियाली के वन में,
लेकिन जिसके मन में
अभी शेष है चलने की अभिलाषा
एक सुनहली किरण उसे भी दे दो।
मौन, कर्म में निरत,
बद्ध पिंजर में व्याकुल,
भूल गया जो दुःख जतलाने वाली भाषा
उसको भी वाणी के कुछ क्षण दे दो।
तुम जो सजा रहे हो
ऊँची फुनगी पर के ऊर्ध्वमुखी
नव-पत्लव पर आभा की किरणें
तुम जो जगा रहे हो
दल के दल कमलों की आँखों के
सब सोए सपने,
तुम जो बिखराते हो भू पर
राशि-राशि सोना
पथ को उद्भासित करने।
एक किरण से
उसका भी माथा आलोकित कर दो।
एक स्वप्न उसके भी सोए मन में
जाग्रत कर दो
एक सनुहली किरण उसे भी दे दो।

1. **कवयित्री सुनहली किरण किसे देने के लिए कह रही है–**

(क) अँधेरे में भटकते उस राही को जिसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा

(ख) उस भटकते राही को जो थककर चूर हो गया है

(ग) अँधेरे में भटकते उस राही को जो अभी और चलना चाहता है

(घ) वन में भटकते उस राही को जो रास्ता भूल गया है।

2. **कवयित्री ने कैसे व्यक्ति को वाणी देने की बात कही है–**

(क) जो निरंतर कर्म में लगा हुआ है

(ख) जो बोल नहीं सकता

(ग) जो अपने दुःख को अभिव्यक्त करने वाली भाषा भूल गया है

(घ) जो पिंजरे में बंद है।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**

कथन (A)–जो अँधेरे में भटक रहा है, उसे एक रोशनी की किरण दे दो।

कारण (R)–जो दुख व्यक्त करने की भाषा भूल गया है, उसे वाणी दे दो।

(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

(घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

4. **'फुनगी' शब्द का अर्थ है–**
(क) पेड़ की डाली का कोमल पत्तों से युक्त अंतिम सिरा
(ख) नए-नए पत्ते
(ग) छोटी-सी चिड़िया
(घ) छोटे-छोटे गुब्बारे।

5. **कौन-सा शब्द 'अभिलाषा' का पर्याय नहीं है–**
(क) लालसा (ख) कामना
(ग) इच्छा (घ) वासना।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ग) **3.** (क) **4.** (क) **5.** (घ)।

(24) हैं जनम लेते जगह में एक ही
एक ही पौधा उन्हें है पालता।
रात में उन पर चमकता चाँद भी,
एक ही सी चाँदनी है डालता।।
मेह उन पर है बरसता एक-सा,
एक-सी उन पर हवाएँ हैं बही।
पर सदा ही यह दिखाता है हमें,
ढंग उनके एक-से होते नहीं।।
छेदकर काँटा किसी की उँगलियाँ
फाड़ देता है किसी का वर वसन।
प्यार-डूबी तितलियों के पर कतर,
भौंर का है बेध देता श्याम तन।।
फूल लेकर तितलियों को गोद में,
भौंर को अपना अनूठा रस पिला।
निज सुगंधों औ, निराले रंग से,
है सदा देता कली जी की खिला।।
है खटकता एक सबकी आँख में,
दूसरा है सोहता सुर-सीस पर।
किस तरह कुल की बड़ाई काम दे
जो किसी में हो बड़प्पन की कसर।।

1. **फूल और काँटे में कौन-सी बात समान नहीं है–**
(क) वे एक ही जगह जन्म लेते हैं
(ख) उनका स्वभाव एक-सा होता है
(ग) एक ही पौधा उन्हें पालता है
(घ) चाँद उन पर एक-सी चाँदनी डालता है।

2. **फूल सभी को प्यारा लगता है–**
(क) अपनी खुशबू के कारण
(ख) अपनी कोमलता के कारण
(ग) अपने सौंदर्य के कारण
(घ) अपने रस, रंग, खुशबू और स्वभाव के कारण।

3. **कौन-सी प्रवृत्ति काँटे की नहीं है–**
(क) तितलियों को गोद में खिलाना
(ख) भँवरे का शरीर बींध देना
(ग) किसी के कपड़े फाड़ देना
(घ) किसी की उँगलियाँ छेद देना।

4. **'बड़प्पन' शब्द का क्या अर्थ है–**
(क) घमंड (ख) ऊँचा कुल
(ग) महानता या श्रेष्ठता (घ) विशाल आकार।

5. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–काँटा किसी की उँगलियाँ छेद डालता है।
कारण (R)–काँटा तितलियों को अपना अनूठा रस पिलाता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

उत्तर– 1. (ख) **2.** (घ) **3.** (क) **4.** (ग) **5.** (ख)।

(25) विषुवत्-रेखा का वासी जो,
जीता है नित हाँफ-हाँफ कर।
रखता है अनुराग अलौकिक,
वह भी अपनी मातृभूमि पर।।
ध्रुववासी, जो हिम में, तम में,
जी लेता है काँप-काँप कर।
वह भी अपनी मातृभूमि पर,
कर देता है प्राण-निछावर।।
तुम तो हे प्रिय बंधु! स्वर्ग-सी,
सुखद, सकल विभवों की आकर।
धरा-शिरोमणि मातृभूमि में,
धन्य हुए हो जीवन पाकर।।

1. **'धरा-शिरोमणि मातृभूमि' का अर्थ है–**
(क) मातृभूमि में मणियाँ उत्पन्न होती हैं
(ख) मातृभूमि के सिर पर मणि है
(ग) मातृभूमि भारतवर्ष धरती पर सर्वश्रेष्ठ है
(घ) मातृभूमि मणि के समान है।

2. **ध्रुवीय क्षेत्र में रहने वालों के जीवन में कठिनाइयाँ हैं–**
(क) वहाँ आना-जाना कठिन है
(ख) वहाँ अत्यधिक सरदी और अंधकार है
(ग) वहाँ के लोगों को साँस लेने में कठिनाई है
(घ) सुख-सुविधाओं का अभाव है।

3. **कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–विषुवष्-रेखा का वासी हाँफ-हाँफ कर जीता है।
कारण (R)–वह अपनी मातृभूमि से अलौकित प्रेम रखता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. **कवि इस कविता से क्या संदेश देना चाहता है–**
(क) हमें अपनी मातृभूमि का सम्मान करना चाहिए
(ख) मातृभूमि की जय-जयकार करनी चाहिए
(ग) मातृभूमि के लिए प्राण न्योछावर करने को तैयार रहना चाहिए
(घ) मातृभूमि की रक्षा के लिए तैयार रहना चाहिए।

5. **'स्वर्ग-सी सुखद' में अलंकार है–**
(क) उत्प्रेक्षा (ख) मानवीकरण
(ग) रूपक (घ) उपमा।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (घ)।

(26) खाना खाकर कमरे में बिस्तर पर लेटा
सोच रहा था मैं मन-ही-मन : हिटलर बेटा
बड़ा मूर्ख है, जो लड़ता है तुच्छ-क्षुद्र मिट्टी के कारण
क्षणभंगुर ही तो है रे! यह सब वैभव-धन।
अंत लगेगा हाथ न कुछ, दो दिन का मेला।

लिखूँ एक खत, हो जा गांधीजी का चेला।
वे तुझको बतलाएँगे आत्मा की सत्ता
होगी प्रकट अहिंसा की तब पूर्ण महत्ता।
कुछ भी तो है नहीं धरा दुनिया के अंदर।
छत पर से पत्नी चिल्लाई : "दौड़ो बंदर।"

1. कविता में किसे मूर्ख कहा गया है–

(क) कवि को (ख) बंदर को
(ग) हिटलर को (घ) गांधीजी को।

2. हिटलर मूर्ख है; क्योंकि–

(क) वह लड़ता है
(ख) वह तुच्छ मिट्टी के लिए लड़ता है
(ग) वह गांधीजी का चेला नहीं है
(घ) वह अहिंसा का अर्थ नहीं जानता।

3. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–

कथन (A)–हिटलर बेटा बड़ा मूर्ख है।
कारण (R)–वह तुच्छ मिट्टी के लिए लड़ता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

4. गांधीजी हिटलर को क्या बताएँगे–

(क) आत्मा की सत्ता (ख) जीवन दो दिन का मेला है
(ग) वैभव-धन क्षणभंगुर है (घ) बंदर से कभी मत डरो।

5. 'कुछ भी तो है नहीं धरा दुनिया के अंदर'– पंक्ति में 'धरा' का अर्थ है–

(क) धरती (ख) रखा
(ग) धरती पर (घ) ब्रह्मांड।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (क) **5.** (ख)।

(27) ले चल नाविक मँझधार मुझे, दे दे बस अब पतवार मुझे,
इन लहरों के टकराने पर आता रह-रहकर प्यार मुझे।
मत रोक मुझे, भयभीत न कर, मैं सदा कँटीली राह चला,
मेरे पथ के पतझारों में ही नव-नूतन मधुमास पला।
मैं हूँ अबाध, अविराम, अथक, बंधन मुझको स्वीकार नहीं,
मैं नहीं, अरे, ऐसा राही जो बेबस-सा मन मार चला।
दोनों ही ओर निमंत्रण है–इस पार मुझे, उस पार मुझे,
रंगीन विजय-सी लगती है, संघर्षों में हर हार मुझे।
मैं हूँ अपने मन का राजा, इस पार रहूँ, उस पार चलूँ,
मैं मस्त खिलाड़ी हूँ ऐसा, जी चाहे जीतूँ, हार चलूँ।
मेरे पतवारों पर साथी! लहरों की घात नहीं चलती,
मेरी तो आदत ही ऐसी-संघर्ष-बीच हर बार चलूँ।
फिर कहाँ झुका पाएगा यह विप्लवमय पारावार मुझे,
इन लहरों के टकराने पर आता रह-रहकर प्यार मुझे।

1. राही नाविक से क्या आग्रह करता है–

(क) वह उसे उस पार पहुँचा दे (ख) उसे नाव खेने दे
(ग) उसे मँझधार में ले चले (घ) उसे लहरों से टकराने दे।

2. राही नाविक से उसे भयभीत करने को क्यों मना कर रहा है–

(क) राही को भय नहीं होता
(ख) राही सदा कठिन रास्तों पर ही चला है
(ग) राही बेबस-लाचार नहीं है
(घ) राही अपने मन का राजा है।

3. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–

कथन (A)–मैं इस पार रहूँ या उस पार चलूँ, यह मेरी इच्छा पर निर्भर है।
कारण (R)–मैं अपनी इच्छा से हारने-जीतने वाला मस्त खिलाड़ी हूँ।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।

4. कविता का मूलभाव है–

(क) लहरों से टकराने वाला उस पार पहुँच जाता है
(ख) निरंतर संघर्ष करते रहकर आगे बढ़ने वाले को कोई पराजित नहीं कर सकता
(ग) लगातार मस्त होकर आगे बढ़ते रहना ही ज़िंदगी है
(घ) जो अपनी नैया की पतवार अपने हाथ में रखते हैं, वही पार उतरते हैं।

5. 'मैं हूँ अबाध, अविराम, अथक, बंधन मुझको स्वीकार नहीं', पंक्ति में कौन-सा अलंकार है–

(क) उपमा (ख) अनुप्रास
(ग) रूपक (घ) अतिशयोक्ति।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (ग) **4.** (ख) **5.** (ख)।

(28) ज्यों निकलकर बादलों की गोद से–
थी अभी इक बूँद कुछ आगे बढ़ी,
सोचने फिर-फिर यही जी में लगी–
आह! क्यों घर छोड़कर मैं यों कढ़ी।
दैव, मेरे भाग्य में है क्या बदा,
मैं बचूँगी या मिलूँगी धूल में?
या जलूँगी गिर अँगारे पर किसी
चू पड़ूँगी या कमल के फूल में।
बह गई उस काल कुछ ऐसी हवा
वह समुंदर ओर आई अनमनी
एक सुंदर सीप का मुँह था खुला
वह उसी में जा पड़ी, मोती बनी।
लोग यों ही हैं झिझकते-सोचते
जबकि उनको छोड़ना पड़ता है घर।
किंतु घर का छोड़ना अकसर उन्हें
बूँद लौं कुछ और ही देता है कर।

1. कविता का मूलभाव है–

(क) अचानक घर छोड़कर नहीं जाना चाहिए
(ख) अनिश्चित भविष्य की चिंता में अवसर नहीं खोना चाहिए
(ग) घर से बाहर की दुनिया में निकलने पर ही नए-नए अवसर मिलते हैं
(घ) भविष्य की चिंता नहीं करनी चाहिए।

2. कथन (A) और कारण (R) पर विचार करते हुए सही विकल्प चुनिए–

कथन (A)–एक सुंदर सीप का मुँह खुला हुआ था।
कारण (R)–बूँद उसमें गिरकर नष्ट हो गई।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) गलत है।
(ग) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **बादलों से निकलकर बूँद का क्या हुआ–**
(क) वह अँगारे पर गिरकर जल गई
(ख) वह कमल के फूल में जा गिरी
(ग) वह धूल में गिरकर समा गई
(घ) वह सीप के मुँह में गिरकर मोती बन गई।

4. **'वह समुंदर ओर आई अनमनी' पंक्ति से क्या आशय है–**
(क) वह बिना इच्छा के समुंदर की ओर बह गई
(ख) वह अचानक ही समुंदर की ओर आ गई
(ग) परिस्थितिवश न चाहते हुए भी कोई काम करना
(घ) बेमन से काम करते जाना।

5. **बूँद चिंता क्यों कर रही थी–**
(क) उसका भविष्य अनिश्चित था
(ख) वह पहली बार घर से बाहर निकली थी
(ग) वह स्वयं को कमज़ोर समझ रही थी
(घ) उसके पास कोई सहारा नहीं था।

उत्तर– 1. (ग) **2.** (ख) **3.** (घ) **4.** (ग) **5.** (क)।

अभ्यास प्रश्न

निर्देश–*निम्नलिखित गद्यांशों/पद्यांशों को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सही उत्तर-विकल्प चुनकर लिखिए–*

(1) पढ़ाई में या काम के दौरान ऐसे कई अवसर आते हैं, जब आप उपेक्षित और खिन्न महसूस करते हैं। न चाहते हुए भी कई बार दिन की शुरूआत अनचाही समस्याओं से होती है। ऐसे समय में खुद पर आपका भरोसा कम हो जाता है। आप इस स्थिति से उबरने के लिए हर तरह के उपाय आजमाते हैं–प्रार्थना करते हैं; मंदिर-मसजिद जाते हैं; ज्योतिषी या तांत्रिक के चक्कर काटते हैं, पर इस बात का विश्लेषण नहीं करते कि आखिर इस परिस्थिति से निकलने के लिए क्या प्रयास किए जाएँ और यह संकट आया क्यों? दरअसल हम अपनी समस्याओं की चर्चा बहुत बढ़ा-चढ़ाकर करते हैं और दूसरों की सहानुभूति चाहते हैं, लेकिन सहानुभूति या दया से समस्या हल नहीं होती। हम रात-दिन उसी मुसीबत के बारे में सोचते रहते हैं और इस प्रकार वह पूरी तरह हमारे दिलो-दिमाग पर छा जाती है। यह हमारे ऑफ़िस के और घर के कामों को भी प्रभावित करने लगती है। इससे पूरा परिवार तनाव में आ जाता है; क्योंकि वह भावनात्मक रूप से आपसे मज़बूती से जुड़ा होता है, वह हमेशा आपको ही सही मानता है। इस पूरी प्रक्रिया में यदि हम स्वयं अपने कार्यों का मूल्यांकन करें तो हो सकता है, ऐसी स्थिति से बाहर निकलने में मदद मिल जाए। परिस्थितियों का ठीक-ठाक मूल्यांकन करके आप आसानी से समाधान तक पहुँच सकते हैं। किसी भी समस्या का हल उसकी जड़ में होता है। यदि आप समस्या की जड़ तक पहुँच गए तो समाधान असंभव नहीं होगा।

1. **मुसीबत के समय हम मंदिर-मसज़िद क्यों जाते हैं–**
(क) भगवान हमारी मुसीबत दूर कर देगा
(ख) स्वयं पर हमारा भरोसा कम हो जाता है
(ग) हम मुसीबत का दोष भगवान पर मढ़ देते हैं
(घ) हम स्वयं कुछ करना नहीं चाहते।

2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
कथन (A)–कई बार दिन की शुरूआत अनचाही समस्याओं से होती है।
कारण (R)–ऐसे में खुद पर भरोसा कम हो जाता है।
(क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
(ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
(ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(घ) कथन (A) सही है और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।

3. **'हम रात-दिन अपनी मुसीबत के बारे में सोचते हैं।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
1. वह हमारे दिलो-दिमाग पर छा जाती है।
2. घर और दफ़्तर के कामों को प्रभावित करती है।
3. उससे छुटकारा मिल जाता है।
(क) 1 सही है (ख) 2 सही है
(ग) 3 सही है (घ) 1 और 2 सही हैं।

4. **'समस्या की जड़ तक पहुँचने' का क्या अर्थ है–**
(क) समस्या के प्रभाव को जानने का प्रयास
(ख) समस्या के समाधान को जानने का प्रयास
(ग) समस्या के मूल कारण को जानना
(घ) समस्या की जाँच-पड़ताल करना।

5. **'प्रभावित' में कौन-सा प्रत्यय है–**
(क) वित (ख) त
(ग) आवित (घ) इत।

(2) वर्तमान युग कंप्यूटर युग है। यदि भारतवर्ष पर नज़र दौड़ाकर देखें तो हम पाएँगे कि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में कंप्यूटर का प्रवेश हो गया है। बैंक, रेलवे-स्टेशन, हवाई-अड्डे, डाकखाने, बड़े-बड़े उद्योग-कारखाने व्यवसाय हिसाब-किताब, रुपये गिनने तक की मशीनें कंप्यूटरीकृत हो गई हैं। अब भी यह कंप्यूटर का प्रारंभिक प्रयोग है। आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का संकेत दे रहा है। प्रश्न उठता है कि क्या कंप्यूटर आज की ज़रूरत है? इसका उत्तर है–कंप्यूटर जीवन की मूलभूत अनिवार्य वस्तु तो नहीं है, किंतु इसके बिना आज की दुनिया अधूरी जान पड़ती है। सांसारिक गतिविधियों, परिवहन और संचार उपकरणों आदि का ऐसा विस्तार हो गया है कि उन्हें सुचारु रूप से चलाना अत्यंत कठिन होता जा रहा है।

पहले मनुष्य जीवन-भर में अगर सौ लोगों के संपर्क में आता था तो आज वह दो-हज़ार लोगों के संपर्क में आता है। पहले दिन में पाँच-दस लोगों से मिलता था तो आज पचास-सौ लोगों से मिलता है। पहले वह दिन में काम करता था तो आज रातें भी व्यस्त रहती हैं। आज व्यक्ति के संपर्क बढ़ रहे हैं, व्यापार बढ़ रहे हैं, गतिविधियाँ बढ़ रही हैं, आकांक्षाएँ बढ़ रही हैं, साधन बढ़ रहे हैं। इस अनियंत्रित गति को सुव्यवस्था देने की समस्या आज की प्रमुख समस्या है। कहते हैं आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इस आवश्यकता ने अपने अनुसार निदान ढूँढ़ लिया है।

कंप्यूटर एक ऐसी स्वचालित प्रणाली है, जो कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सकती है। हड़बड़ी में होने वाली मानवीय भूलों के लिए कंप्यूटर राम बाण औषधि है। क्रिकेट के मैदान में अंपायर की निर्णायक भूमिका हो या लाखों-करोड़ों की लंबी-लंबी गणनाएँ कंप्यूटर पलक झपकते ही आपकी समस्या हल कर सकता है। पहले इन कामों को करने वाले कर्मचारी हड़बड़ाकर काम करते थे, एक भूल से घबराकर और अधिक गड़बड़ी करते थे। परिणामस्वरूप काम कम, तनाव अधिक होता था। अब कंप्यूटर की सहायता से काफ़ी सुविधा हो गई है।

1. **वर्तमान युग कंप्यूटर का युग क्यों है–**
   (क) कंप्यूटर के बिना जीवन की कल्पना असंभव सी हो गई है
   (ख) कंप्यूटर ने पूरे विश्व के लोगों को जोड़ दिया है
   (ग) कंप्यूटर जीवन की अनिवार्य मूलभूत वस्तु बन गया है
   (घ) कंप्यूटर मानव सभ्यता के सभी अंगों का अभिन्न अवयव बन चुका है।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–यह कंप्यूटर के प्रारंभिक प्रयोग का युग है।
   कारण (R)–आने वाला समय इसके विस्तृत फैलाव का युग होगा।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) सही है, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) सही है, और कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
3. **'कंप्यूटर एक स्वचालित प्रणाली है।' उपर्युक्त कथन के पक्ष में निम्नलिखित तर्कों पर विचार कीजिए–**
   1. यह कैसी भी अव्यवस्था को व्यवस्था में बदल सकती है।
   2. यह सुविधाजनक नहीं है।
   3. यह मानवीय भूलों के लिए रामबाण औषधि है।
   (क) 1 सही है
   (ख) 2 सही है
   (ग) 3 सही है
   (घ) 1 और 3 सही हैं।
4. **कंप्यूटर के प्रयोग से पहले अधिक तनाव क्यों होता था–**
   (क) लंबी-लंबी गणनाएँ करनी पड़ती थीं
   (ख) गलतियों के डर से कर्मचारी घबराए रहते थे
   (ग) क्रिकेट मैचों में गलत निर्णय का ख़तरा रहता था
   (घ) मानवीय भूलों के कारण बड़ी दुर्घटनाएँ होती थीं।
5. **कंप्यूटर के बिना आज की दुनिया अधूरी है; क्योंकि–**
   (क) सारी व्यवस्था, उपकरण और मशीनें कंप्यूटरीकृत हैं
   (ख) कंप्यूटर ही मानव एकीकरण का आधार है
   (ग) कंप्यूटर ने सारी प्रक्रियाएँ आसान बना दी हैं
   (घ) कंप्यूटर द्वारा मानव सभ्यता अधिक समर्थ हो गई है।

(3) मन समर्पित, तन समर्पित और यह जीवन समर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँ तुम्हारा ऋण बहुत है, मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा, फिर भी निवेदन–
थाल में लाऊँ सजाकर भाल जब भी,
कर दया स्वीकार लेना यह समर्पण।
गान अर्पित, प्राण अर्पित
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।
माँज दो तलवार को, लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर, कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो, चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी।
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित,
आयु का क्षण-क्षण समर्पित।
चाहता हूँ देश की धरती, तुझे कुछ और भी दूँ।

1. **कवि किसके प्रति तन-मन-जीवन समर्पित करना चाहता है–**
   (क) माता के　　(ख) पिता के
   (ग) मातृभूमि के　　(घ) जाति के।
2. **कवि मातृभूमि से कौन-सा समर्पण स्वीकार करने का निवेदन करता है–**
   (क) थाल में सजे फूल　　(ख) थाल में सजी मिठाइयाँ
   (ग) थाल में सजे फल　　(घ) थाल में सजा मस्तक।
3. **कवि मातृभूमि का ऋण क्यों नहीं उतार सकता–**
   (क) वह अकिंचन है　　(ख) वह कृतघ्न है
   (ग) वह संवेदनहीन है　　(घ) वह अज्ञानी है।
4. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–हे देश की धरती! तुझ पर मेरा तन, मन, जीवन समर्पित है।
   कारण (R)–जब मैं थाल में अपना मस्तक सजाकर लाऊँ तो उसे स्वीकार कर लेना।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (ख) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (घ) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
5. **कवि शीश पर किसकी छाया चाहता है–**
   (क) आशीष की　　(ख) वृक्षों की
   (ग) छाते की　　(घ) बादलों की।

(4) छोटे, तारों-से छितरे, फूलों के छींटे
झागों-से लिपटे लहरी श्यामल लतरों पर
सुंदर लगते थे, मावस के हँसमुख नभ-से,
चोटी के मोती-से, आँचल के बूँटों-से!
ओह, समय पर उनमें कितनी फलियाँ टूटीं!
कितनी सारी फलियाँ! कितनी प्यारी फलियाँ!
यह धरती कितना देती है! धरती माता
कितना देती है अपने प्यारे पुत्रों को!
नहीं समझ पाया था मैं उसके महत्त्व को!
बचपन में, छिः स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर!
रत्नप्रसविनी है वसुधा, अब समझ सका हूँ!
इसमें सच्ची समता के दाने बोने हैं,
इसमें जन की क्षमता के दाने बोने हैं,
इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं-
जिससे उगल सके फिर धूल सुनहली फसलें
मानवता की, जीवन श्रम से हँसें दिशाएँ!
हम जैसा बोएँगे, वैसा ही पाएँगे!

1. **कविता क्या संदेश देती है–**
   (क) मेहनत से मानवता की फसल उगाकर सबको सुखी बनाएँ
   (ख) धन का मोह व स्वार्थ का त्याग करें
   (ग) सभी का सम्मान करें
   (घ) देश के प्रति अपने दायित्वों का निर्वाह करें।
2. **कथन (A) और कारण (R) को पढ़कर उपयुक्त विकल्प चुनिए–**
   कथन (A)–धरती माता अपने पुत्रों को बहुत अधिक देती है।
   कारण (R)–इसमें मानव ममता के दाने बोने हैं।
   (क) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं तथा कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या है।
   (ख) कथन (A) और कारण (R) दोनों सही हैं, किंतु कारण (R) कथन (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (ग) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।
   (घ) कथन (A) गलत है, किंतु कारण (R) सही है।

3. फलियाँ देखकर कवि को क्या समझ आया–

(क) धरती की ममता

(ख) धरती की सहनशीलता

(ग) धरती की उदार भाव से देने की क्षमता

(घ) धरती की समता।

4. 'छिः स्वार्थ लोभवश पैसे बोकर', का आशय है कि कवि–

(क) स्वार्थ के कारण अज्ञानी हो गया

(ख) लोभवश वास्तविकता को समझ न सका

(ग) लोभी हो गया था

(घ) सांसारिक लगाव प्रबल हो गया।

5. 'रत्नप्रसविनी' का अर्थ है–

(क) रत्नों की खान (ख) रत्नों की जननी

(ग) रत्नों की देवी (घ) रत्न दान करने वाली।